समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 अप्रैल 2019

वर्ष : 31, अंक : 20

प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 अप्रैल 2019

वार्षिक चंदा : ₹ 60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-

प्रति अंक : ₹ 3/-

E-mail: news.shantikunj@gmail.com RNI-NO.38653/ 80 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2018-20

श्रद्धेय डॉ. साहब का गायत्री चेतना केन्द्र, मुनस्यारी का विशेष प्रवास अधिक साधकों के लिए व्यवस्था बनाने के प्रयास 4

देव संस्कृति विवि. और कैवल्यधाम, लोनावाला के बीच एमओयू 7

राष्ट्रीय संगोष्ठी संगठन सशक्तीकरण के लिए हुआ गहन मंथन 8

स्वार्थ की राजनीति के दलदल से हमें उबरना ही होगा

रामराज्य की विशेषताओं को हम समझें, सीखें, अपनाएँ

रामराज्य की विशेषताएँ

भगवान श्रीराम का चौदह वर्ष का वनवास एक नए समाज की संरचना का प्रथम सोपान था। इन चौदह वर्षों में निषादराज को समानता का अधिकार देना, गीधराज जटायु से प्रीति, शबरी के झूठे बेर खाना, रीछ-वानरों से मित्रता, राक्षस कुल के विभीषण से प्रेमभाव वर्गविहीन समाज की स्थापना की दृष्टि से सामान्य नहीं, विशेष महत्त्व की घटनाएँ थीं। वे उक्त सभी वर्गों को अपना मित्र और हितैषी बनाकर अयोध्या लौटे थे।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम एक ओर अत्रि और वाल्मीकि जैसे महामना ऋषि-मुनियों से आध्यात्मिक सम्बन्ध स्थापित करते हैं, दूसरी ओर वनवासी कोल-भील जाति से वे पारिवारिक स्नेहयुक्त सम्बन्ध स्थापित करते हैं। वे चौदह वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटेऔर एक राजा के रूप में भी उन्होंने उसी सर्वोदयी नीति का पालन किया।

वर्तमान युग के प्रशासकों को भी भगवान राम की उसी सर्वोदयी विचारधारा को अपनाने की आवश्यकता है। उन दिनों राजतंत्र था, आज विश्व के अधिकांश देशों में प्रजातंत्र है। किसी देश में कोई भी शासन प्रणाली क्यों न हो, प्रशासकों का उद्देश्य प्रजा को सुख, शांति, सुव्यवस्था एवं न्याय प्रदान करना होता है।

वंश नहीं, व्यक्तित्व प्रधान

राजा वही अच्छा माना जाता है, जिसमें बहुसंख्यक समुदाय के साथ अल्पसंख्यक जातियों को भी समान अधिकार प्राप्त हों। राम का राज्य जाति और लिंग पर आधारित समस्त प्रकार के भेदभावों से रहित था। राज्य में पद प्रदान करने की नीति सर्वथा योग्यता और अनुभव पर आधारित थी। वानर हनुमान चक्रवर्ती सम्राट भगवान राम के निकटतम सेवक थे। वे वस्तुतः भरत जैसे त्यागी और लक्ष्मण जैसे परम सेवक भाई से भी अधिक अधिकार सम्पन्न थे।

जिस भरत ने अवध के राज्य और विपुल सम्पत्ति की ओर तिरछी निगाह से भी नहीं देखा, जिसके त्याग के सामने वशिष्ठ जैसे प्रभावशाली पुरोहित की गम्भीर विवेकबुद्धि भी अबला बन चुकी थी, (*भरत महा महिमा जलरासी। मुनिमत ठाढ़ तीर अबला सी।।*) वही भाई भरत अपने चक्रवर्ती सम्राट भाई राम से कुछ कहने के लिए हनुमान से सिफारिश करवाते हैं। क्या अधिकार सम्पन्नता का इससे बड़ा कोई दूसरा प्रमाण अन्यत्र कहीं मिल सकता है?

उत्तरकाण्ड में अमराई में सनकादि मुनीश राम से मिलने जाते हैं। उनके जाने के बाद भरत के प्रश्न को हनुमान जी बताते हैं। देखें-

अन्तरजामी प्रभु सब जाना। बूझत कहहु कहा हनुमाना।।
जोरि पानि कह तब हनुमंता। सुनहु दीनदयाल भगवंता।।
नाथ भरत कछु पूंछन चहहीं। प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं।।
तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ। भरतहि मोहि कछु अन्तर काऊ।।

राम के राज्य में प्रत्येक महत्त्वपूर्ण युद्ध और समारोह में विभीषण और सुग्रीव को उपस्थित पाते हैं। यदि दीर्घकाल तक के राम-राज्य में कभी तनिक भी भेद होता तो सम्भवतः ऐसी स्थिति न होती। इन उदाहरणों से राम के राज्य को सच्चे अर्थों में लोक-कल्याणकारी राज्य की संज्ञा दे सकते हैं, जिसमें सभी को फलने-फूलने और विकास करने का समान अधिकार प्राप्त था।

समानता के कुछ अच्छे-बुरे प्रयोग

कार्लमार्क्स ने समाजवाद और साम्यवाद का नारा दिया। विश्व के दो बड़े देश चीन और रूस ने इसे अपनाया। कार्लमार्क्स का स्वप्न प्राणिमात्र को सुखी और सन्तुष्ट देखना था। उनकी कल्पना थी कि साम्यवादी प्रथा से समाज में विषमता मिट जायेगी, सब समान हो जायेंगे तो आपसी कलह न होगी। परिणामस्वरूप न्याय, सुरक्षा की आवश्यकता ही न होगी।

लेकिन व्यवहार में हम इसका उल्टा पाते हैं। वास्तव में वहाँ साम्यवादी प्रथा जनता की स्वेच्छा पर नहीं, वरन पार्टी के कड़े आतंकपूर्ण नियंत्रण में चल रही है, व्यक्तियों का कोई अस्तित्व नहीं है। वहाँ की समानता लाने के लिए बलपूर्वक व्यक्ति की सम्पत्ति छीनकर उसे समाज की सपत्ति घोषित करने की परम्परा ठीक नहीं है।

महात्मा गाँधी कहते थे कि हृदय परिवर्तन के आधार पर पवित्र साधनों द्वारा समाज में समानता लाने का प्रयत्न ही भारत के लिए उपयुक्त है। उनके शिष्य आचार्य विनोबा भावे इसी आधार पर सर्वोदय

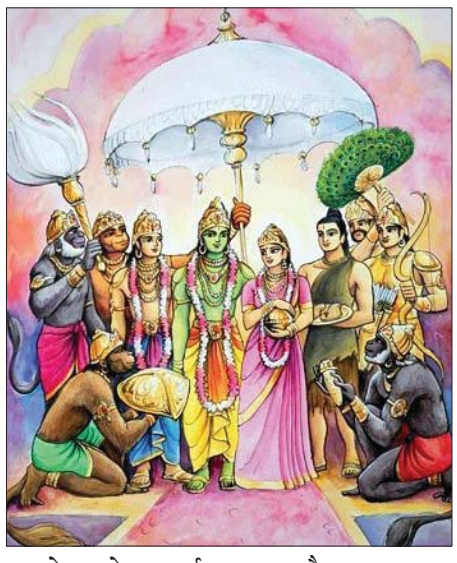

आन्दोलन के अन्तर्गत भूदान और ग्रामदान का आन्दोलन चला रहे थे। हम देखते हैं कि गैर सरकारी व्यक्ति के रूप में शासन शक्ति से सर्वथा विहीन होने पर भी वे अपने उद्देश्य में बहुत हद तक सफल हुए हैं और उनका प्रयत्न उपर्युक्त वर्णित दोषों से मुक्त है।

रामराज्य में वर्गविहीन समाज

इस संदर्भ में हम भगवान राम द्वारा स्थापित वर्ग-विहीन समाज की नीतियों पर ध्यान दें तो अधिक लाभकारी होगा।

राम राज्य बैठे त्रैलोका। हर्षित भए गये सब सोका।।
बैर न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।।

अपने देश में विषमता मिटाने का जो कार्य हमारी सरकारें अब तक नहीं कर सकीं, राम के गद्दी पर बैठने के बाद अल्पावधि में ही वह पूरा हो गया। विषमता समाप्त हो गई और तीनों लोकों के लोग हर्ष और सुख का अनुभव करने लगे।

ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि भगवान राम ने सही ढंग से वर्ग-विद्वेष को मिटाने का प्रयत्न किया था। वास्तव में समाज से वर्ग विद्वेष को मिटाने का मूलाधार है-आपसी प्रेम, निर्वैरता। केवल आर्थिक सम्पन्नता हमारी समस्त समस्याओं का समाधान नहीं है।

मन :स्थिति ही बदलनी होगी

विषमता हमारे मन की स्थिति है, शरीर का स्वरूप नहीं। हर काल में शारीरिक, बौद्धिक और आर्थिक दृष्टि से लोगों का असमान होना स्वाभाविक और नैसर्गिक है। शरीर से कोई मोटा होता है, कोई दुबला। किसी की बुद्धि तीव्र और कुशाग्र होती है तो अनेकों महामूर्ख या बुद्धिहीन होते हैं। कोई राज्य का प्रधानमंत्री होता है तो कोई चौकीदार। प्रधानमंत्री के लिए कार की अनिवार्य आवश्यकता है, लेकिन चौकीदार के पद के लिए वह आवश्यक नहीं है। प्रश्न उठता है कि फिर समानता लाने का प्रयत्न ही बेकार है?

वास्तव में समानता का अर्थ है अपनी-अपनी स्थिति में सबको विकास और प्रगति का अवसर प्रदान करना। किसी की हस्ती मिटाकर दूसरे को बड़ा बनाना वर्गविहीन समाज के सिद्धांत के विपरीत है। राम ने इस बात को जाना था कि सुखी समाज का आधार निर्वैर है। इसलिए विषमता मिटाने के लिए उन्होंने समाज से वैर-भाव को मिटाया। वह सारी प्रणालियाँ, जिनसे प्रजा-वर्ग में आपसी कलह और द्वेष पैदा हो, राम ने समाप्त कर दीं।

घृणित परंपरा का अंत हो

आज हम गाँव-गाँव में फूट और परिवार में कलह का दर्शन करते हैं। चुनावों में एक-दूसरे को नीचा दिखाने में हमारी शक्ति व सम्पत्ति और बौद्धिक क्षमता का बड़ा भाग व्यय होता है।

ऐसी अधिकांश बुराइयों की जड़ दलगत राजनीति है। केन्द्र तथा प्रान्तों में पार्टीबन्दी के आधार पर विधान सभाओं का निर्माण, स्वायत्त शासन में पार्टीबन्दी, पंचायत राज्य एक्ट बनाकर गाँव-गाँव में दलबन्दी, कलह और वर्ग विद्वेष का ज़हर पूरी तरह से फैला दिया गया है। हमारी अशांति और असमानता का यही मुख्य कारण है। भगवान राम के शासन को एकात्मक अवश्य कहा जा सकता है, लेकिन उसमें सभी को विकास का समानाधिकार था। इसलिए राम के शासन को हम सच्चे अर्थों में प्रजातन्त्र शासन प्रणाली पर आधारित शासन कह सकते हैं।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य । वाङ्मय-30 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम', पृष्ठ 2.14-2.17 से संकलित, संपादित

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना वर्ष

लक्ष्य 2.40 लाख घरों तक आत्मीयता और प्रेरणा की संजीवनी पहुँचाना

- परम वं. माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष तक समाज में व्यापक परिवर्तन दिखाई दे, यही हमारा लक्ष्य है।
- 2 जून को पूरे देश के 2.40 लाख घरों में एक ही समय पर यज्ञ कराने का एक असाधारण-अभूतपूर्व प्रयोग इस दिशा में किया जा रहा है। इसका हमें श्रेष्ठतम उपयोग कर लेना चाहिए।
- हम सब मिशन से जुड़े हैं पावन गुरुसत्ता अथवा गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं से मिले प्रेम, प्रोत्साहन, प्रेरणाओं से। आत्मीयता और प्रेरणा की इसी युग संजीवनी को इस वर्ष कम से कम इन दो लाख चालीस हजार घरों में हमें पहुँचा ही देना चाहिए, ताकि उन घरों में उपासना, साधना, स्वाध्याय, यज्ञ से विचार क्रांति का नया अध्याय नियमित रूप से आरंभ हो सके।

प्रज्ञा अभियान का योगदान : इस प्रयोग पर अविलंब कार्य आरंभ कर देना चाहिए। हर प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, शाखा, शक्तिपीठ को हर वर्ग के उन घरों में प्रज्ञा अभियान प्रचार पत्रक के रूप में अपनी ओर से या समर्थ महानुभावों के सहयोग से पहुँचाना आरंभ कर देना चाहिए। एक वर्ष तक उन सबसे हमारा जनसंपर्क होता रहे तो निश्चित रूप से उनके जीवन में व्यापक परिवर्तन होगा। अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना आदि सभी पत्रिकाओं की सदस्यता बढ़ने लगेगी, हर अभियान को गति मिलेगी।

संपर्क कीजिए : मोबाइल : 9258369413 (**हर शाखा न्यूनतम 25 नये घरों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाये।**)

युगऋषि ने कहा था 'यज्ञान्दोलन' को पदोन्नति दें, श्रेष्ठतर बनायें

कुण्डीय यज्ञों की बढ़ायें वैज्ञानिकता, दीपयज्ञों की बढ़ायें प्रामाणिकता

पूर्व संदर्भ

पाक्षिक के गत (1 अप्रैल) अंक में परिजनों का ध्यान युगऋषि के उस कथन की ओर आकर्षित किया गया, जिसमें उन्होंने अपने यज्ञाभियान को पहले से बेहतर बनाने के सूत्र बताये। इस अभियान के पीछे उनका मुख्य उद्देश्य यह रहा :-

मुख्य : काल प्रभाव ने यज्ञ जैसे उपयोगी और आवश्यक विधि-विधान को जन-जीवन से दूर कर दिया था, एक व्यापक अभियान चलाकर उसका महत्त्व जन-जन को समझाया जाय और उसे जीवन धारा में जोड़ा जाय। इसके लिए यज्ञ के दोनों प्रभावों को प्रकाश और प्रचलन में लाना जरूरी था।

एक : जन-जन को भ्रम और भय से मुक्त करके उन्हें यज्ञीय अनुशासन समझाना। फिर क्रमशः उन्हें जीवन को यज्ञीय अनुशासन में लाने के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित, प्रशिक्षित करके यज्ञमय जीवन जीने योग्य अवस्था तक पहुँचाया जाय। यज्ञ के चेतन विज्ञान को पुनर्जीवित-प्रभावी बनाया जाय।

दो : यज्ञ के द्वारा पर्यावरण संशोधन, प्रकृति की उर्वरा शक्ति के संवर्धन, रोग निवारण जैसे पदार्थ विज्ञान सम्मत प्रयोगों द्वारा जन-जन को लाभान्वित किया जाय।

मनुष्य का स्वभाव है कि वह भव्य प्रदर्शन के साथ किए जाने वाले समारोहों की तरफ सहज ही आकर्षित होता है। उलटी-पुलटी परम्पराओं की पकड़ से जनसामान्य को छुड़ाने के लिए ऐसे उत्साहवर्धक कार्यक्रमों की भी बड़ी भूमिका होती है। इसलिए समय की आवश्यकता और अपनी सामर्थ्य के बीच सन्तुलन बिठाते हुए भव्य आकर्षणयुक्त बड़े-भव्य समारोहयुक्त यज्ञों के लिए परिजनों को प्रोत्साहित किया गया। परिजनों ने ख़तरे उठाकर भी जिम्मेदारियाँ सँभालीं और यह मोर्चा फ़तह कर लिया। तमाम कथित धर्मगुरुओं के विरोध और संसाधनों की कमी की परवाह न करते हुए आयोजन भी सफल बनाये और जन-जन को यज्ञ प्रक्रिया से जोड़ने में सफलता मिली। प्रथम चरण का उद्देश्य पूरा हुआ। तब उन्होंने अगले चरणों की ओर ध्यान दिलाया और उन्हें प्राथमिकता देने की प्रेरणा दी।

कहा, अभी हमने यज्ञों का उपयोग भीड़ इकट्ठी करने वाली 'डुगडुगी' की तरह ही किया था। अब यज्ञीय अभियान को पदोन्नति देने, उसे श्रेष्ठतर स्तर प्रदान करने की आवश्यकता है। डुगडुगी बजाकर जो भीड़ इकट्ठी की है, अब उसे सुगढ़-अनुशासित बनाने के प्रयास किए जायें। अपने यज्ञों को अब सामूहिक ड्रिल, परेड स्तर पर ले जाया जाय। संचालकों के मंत्रोच्चार टूटे-फूटे न रहने दिए जायें। उन्हें स्वरबद्ध एवं तालबद्ध किया जाय। हर कर्मकाण्ड के साथ की जाने वाली क्रियाओं को सही रूप में, एक साथ करने के निर्देश दिये जायें। उसके लिए प्रत्येक कुण्ड पर प्रशिक्षित उपाचार्यों को नियुक्त किया जाय।

नैष्ठिक परिजनों ने केन्द्रीय और क्षेत्रीय स्तरों पर उनके निर्देशों को महत्त्व दिया और हमारे आयोजन आश्वमेधिक शैली में अनुशासित ढंग से होने लगे। याजक भी साधना एवं प्रशिक्षण लेकर शामिल होने लगे तथा हमारे यज्ञों ने एक आध्यात्मिक परेड जैसा स्तर पा लिया। यज्ञीय आन्दोलन और एक सीढ़ी ऊपर उठ गया। उसका श्रेय आयोजकों को और लाभ जन-जन को मिलने लगा।

लेकिन इस चरण के श्रेय-सफलता से अगले चरणों को पूरा करने की जिम्मेदारी से तो नहीं बचा जा सकता। ऋषि के निर्देशों को मानते हुए अगले चरणों को भी तो सफल-सार्थक बनाना है।

अगले चरण

गुरुवर ने कहा कि डुगडुगी बजाकर मजमा इकट्ठा कर लिया। फिर उसे लयबद्धता और क्रिया अनुशासन से जोड़कर आध्यात्मिक परेड का रूप दे दिया। अब उसके स्थूल-सूक्ष्म विज्ञान पक्ष को अधिक कारगर-प्रभावी बनाना है। खर्चीले बड़े -भव्य आयोजनों की अनगढ़ होड़ नहीं लगने देना है। विवेकपूर्वक ऐसा स्वरूप देना है कि जिससे लोगों का जीवन यज्ञीय बने तथा बिगड़े पर्यावरण को ठीक रहे, भूमि-जल-वायु सभी की उर्वरा और आरोग्य शक्ति का संवर्धन हो। लोकशिक्षण भी होता रहे तथा लोगों की प्रवृत्तियाँ भी संकल्पपूर्वक शुद्ध होती रहें। जीवन की श्रेष्ठ विभूतियों को लोकहित में अर्पित करने की भावनाएँ उमड़ें, उस दिशा में कुशलता भी बढ़े। लेकिन कर्त्तापन का अभिमान न पनपने पाये, 'इदं न मम' का सूत्र जीवन व्यवहार में उतरने लगे। तभी मनुष्य में देवत्व के उदय के साथ धरती पर स्वर्ग के अवतरण की दिव्य योजना साकार होगी।

प्राथमिकता बदलें : यज्ञों के प्रति जनजीवन में जो उत्साह जागा है, उसे 'प्रदर्शन से सृजन' की ओर मोड़ा जाय। आवश्यकतानुसार नये क्षेत्रों में अथवा पुराने क्षेत्रों में भी बड़े कुण्डीय यज्ञ भले ही होते रहें, किन्तु प्राथमिकता यज्ञों की वैज्ञानिकता, प्रामाणिकता, सृजनात्मकता बढ़ाने को दी जाय।

उदाहरण के साथ समझाया जा चुका है कि बड़े-विशाल भव्य कुण्डीय यज्ञों की होड़ यज्ञान्दोलन को व्यसन, फैशन एवं व्यवसाय की ओर बरबस मोड़ सकती है। उससे बचा जाय। वैज्ञानिक लाभ पाने के लिए विकेन्द्रित छोटे-छोटे यज्ञायोजन अधिक विज्ञान सम्मत ढंग से किए-कराये जा सकते हैं। उनमें समय-श्रम-साधन कम लगते हैं, लेकिन परिणाम बेहतर मिलते हैं।

लोकशिक्षण की दृष्टि से दीपयज्ञ अधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं। कम साधनों, कम खर्चे और सुगम व्यवस्था के कारण इनका आयोजन हर क्षेत्र में, हर वर्ग में आसानी से होता है। किसी घर में जन्मदिन, विवाहदिन या अन्य किसी उपलक्ष्य में यज्ञ करना हो तो घर की पूरी व्यवस्था बदलनी पड़ती है। लेकिन दीपयज्ञ सामान्य हेर-फेर से ही संभव हो जाता है। कर्मकाण्ड में मंत्रों के स्थान पर सूत्रों का प्रयोग अधिक होता है, जिसके कारण सभी वर्गों के लोग उन्हें समझ और अपना पाते हैं। लेकिन इस संदर्भ में यह बात याद दिलाने योग्य है कि दीपयज्ञों को युगऋषि द्वारा बताये गये मूल निर्देशों के अनुरूप स्वरूप देना जरूरी है।

ऋषि की दृष्टि

गुरुवर ने सूक्ष्मीकरण साधना के बाद दीपयज्ञों पर बल दिया। उनके अनुसार जन आन्दोलनों को जितना सुगम और कम खर्चीला बनाया जा सके, वे उतने ही तेज़ी से फैलते हैं। उनमें लोभियों, लालचियों को घुसपैठ करने के अवसर भी नहीं मिलते। धन-प्रधान होने की जगह भावना प्रधान होने से उनका अन्तःकरण पर प्रभाव भी अधिक गहरा पड़ता है। इसलिए लोकशिक्षण के लिए जन-जन में यज्ञीय जीवन की प्रेरणा संचारित करने के लिए दीपयज्ञों को अधिक महत्त्व देने के निर्देश दिये। उसके विधि-विधान समझाये, जो इस प्रकार हैं :-

मूल स्वरूप : यज्ञकुण्ड या वेदिका के स्थान पर एक थाली या बड़ी तश्तरी को यज्ञ वेदिका की तरह प्रयोग किया जाय। उसमें -

- एक दीपक (मिट्टी, धातु या आटे का) बत्ती तथा घी सहित।
- एक-दो अगरबत्तियाँ (स्टैण्ड सहित) या धूपबत्ती।
- पूजा प्रतीक के रूप में एक सुपाड़ी।
- पूजन की सामग्री (हल्दी/रोली/चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य आदि)। यह वस्तुएँ घर में सहज उपलब्ध होती हैं।
- एक व्यक्ति (नर/नारी) या एक दम्पति के सामने एक वेदिका रहे।

इसमें हर याजक/दम्पति प्रारंभ से अन्त तक हर क्रिया में भाग लेता है तथा उसके साथ जुड़ी प्रेरणा को हृदयंगम कर पाता है।

प्रारंभ में इसी प्रकार दीपयज्ञ किए-कराये गये। कुछ श्रद्धालु अपनी वेदिका साथ नहीं ला पाते थे, तो कुछ शाखाओं ने थाली वेदिका के 24, 51, 108 सेट स्वयं खरीद कर रख लिए थे। पूजन सामग्री के पैकेट भी बनाकर रख लिए जाते थे। जितनी थाली वेदिकायें स्थापित होती थीं, उतने ही वेदीय दीपयज्ञ कहे जाते थे।

महत्त्व : ऐसे ही दीपयज्ञों को युगऋषि ने महत्त्व दिया था। कुण्डीय यज्ञों की स्वीकृति माँगने आने वाले नैष्ठिकों को वे ऐसे ही दीपयज्ञों की प्रेरणा देते थे। उन्होंने कहा था-

कुण्डीय यज्ञ नहीं, मुण्डीय यज्ञ करो। अर्थात् हर वेदिका के साथ जुड़े व्यक्तियों के मानस में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाया जाना चाहिए। उनमें यज्ञीय जीवन जीने की उमंगें उठनी चाहिए।

यह भी कहा था कि परम्परागत कुण्डीय यज्ञों में मेरी सूक्ष्म उपस्थिति हो, न हो; किन्तु विचार क्रांति के दीपयज्ञों में मेरी चैतन्य उपस्थिति का अनुभव लोग अवश्य करेंगे।

रूप बदला : बाद में इनके प्रति आकर्षण बढ़ा तो बड़ी संख्या में लोग कौतूहलवश भी शामिल होने लगे। तब उनके निमित्त सामूहिक रूप से दीपक प्रज्वलित करने की अनुमति दी गई। मुख्य याजक थाली वेदिका साहित मंच के सामने बैठाये जाते थे और दायें-बाँयें तथा पीछे अन्य श्रद्धालुगण बिठाये जाते थे।

बाद में दीपयज्ञों की संख्या एवं सज्जा को ही अधिक महत्त्व दिया जाने लगा। थाली वेदियाँ लगभग गायब हो गईं। कहीं-कहीं मंच पर विशेष प्रतिनिधियों को थाली वेदिका सहित बिठाया जाने लगा। इससे आयोजन की सुगमता और शोभा तो बढ़ी, लेकिन मूल प्रभाव में कमी आयी। क्योंकि सामने वेदिका न होने से, विभिन्न उपक्रमों में सीधी भागीदारी न होने से अपेक्षित यज्ञीय भावना का उभार नहीं होने पाता। इसलिए दीपयज्ञों को पुनः गुरुवर की योजनानुसार प्रभावी-प्रामाणिक रूप देने के संकल्पित प्रयास किए जाने चाहिए। उनके प्रदर्शनात्मक रूप की अपेक्षा उनके सृजनात्मक स्वरूप को उभारने वाले क्रमों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

व्यावहारिक सुझाव

कुण्डीय यज्ञ : • इस प्रकार कुण्डीय यज्ञों एवं दीपयज्ञों के प्रचारात्मक स्वरूप से ऊपर उठकर उन्हें श्रेष्ठ वातावरण और श्रेष्ठ मनःस्थिति बनाने वाले प्रामाणिक-प्रभावशाली विज्ञान सम्मत सफल प्रयोगों के रूप में स्थापित किया जा सकता है। यज्ञ प्रक्रिया के प्रति उभरे जोश को, उत्साह को सही दिशा में सुनियोजित करने से सीमित शक्ति, समय एवं साधनों से कई गुने बेहतर परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। वन्दनीया माताजी की जन्म शताब्दी के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में इन प्रयोगों से बहुत सहयोग प्राप्त हो सकेगा।

• क्षेत्रीय आवश्यकता के अनुसार कुण्डीय यज्ञों के प्रदर्शनात्मक प्रयोग विवेकानुसार भले ही होते रहें, किन्तु इस दिशा में उभरे उत्साह को जीवन परिष्कार तथा वैज्ञानिक प्रभाववर्धक यज्ञों की ओर मोड़ा जाय।

• जितने कुण्डीय यज्ञ करना हो, उसके अनुसार प्रतिकुण्ड कम से कम 20 साधकों या 10 दम्पतियों को संकल्पित कराया जाय। वे उस अवधि में निर्धारित जप-तप अनुष्ठान करें। कम से कम एक माह अथवा संकल्प के दिन से यज्ञ सम्पन्न होने तक जीवन परिष्कार की साधना करें।

• लोकहित के किसी आन्दोलन में भागीदार बने।

• एक कुण्ड के लिए वाञ्छित साधक तैयार करने की जिम्मेदारी एक-एक नैष्ठिक को दी जाय। वे साधकों को खोजें, प्रेरित-प्रशिक्षित एवं संकल्पित करने की जिम्मेदारी निभायें। उनसे निरंतर सम्पर्क बनाकर उनके साधना संकल्पों को धार देने के काम करते रहें।

• यज्ञ में पहुँचने पर उनका स्वागत करने, आत्मीयता का बोध कराने, उनको श्रमदान-व्यवस्था में भागीदार बनाने की जिम्मेदारी भी सँभालें।

• यज्ञ के बाद उन्हें प्रज्ञा मण्डल के रूप में गठित करके युगधर्म के निर्वाह की प्रेरणा देते रहने का क्रम बनाये रखें।

• इन यज्ञों में शुद्ध हवन सामग्री की व्यवस्था तो हो जाती है, यज्ञ के लिए उचित समिधाओं की उपलब्धि कठिन होती है। यज्ञ की वैज्ञानिकता में उचित समिधाओं का भी महत्त्व होता है। इसके लिए देशी गायों के गोबर की समिधाओं का प्रचलन बड़ा उपयोगी सिद्ध हो रहा है। ऐसी समिधाएँ हाथ से भी बन जाती हैं और इसकी मशीनें भी बन गयी हैं। गोबर की खाद बनाने से गोपालक को जितनी आमदनी होती है, उतनी समिधाएँ बनाने से भी हो जाती है। यज्ञ का प्रभाव तो बढ़ ही जाता है।

दीपयज्ञ : दीपयज्ञों के साथ भी यही प्रक्रिया अपनायी जा सकती है। जितने वेदीय दीपयज्ञ करना हो, उतने याजक अथवा दम्पतियों को जप-तप एवं जीवन परिष्कार साधना के संकल्प कराये जा सकते हैं। ऐसे 10-20 साधक तैयार करने की जिम्मेदारी नैष्ठिक यज्ञ उत्प्रेरकों को दी जा सकती है।

• प्रचार के दीपयज्ञों के लिए समर्थ शाखाएँ-पीठें थाली वेदिकाओं के सैट पर्याप्त संख्या में खरीदकर रख सकती हैं। किसी गाँव या मोहल्ले को लक्ष्य करके प्रचार कार्य किया जाय। निर्धारित दिन किसी वाहन में सब सैट, चित्र, बैनर आदि लेकर पहुँचें और यज्ञ सम्पन्न कराकर लौट आयें।

• दीपयज्ञों को किसी आन्दोलन विशेष से भी जोड़ा जा सकता है। जैसे हरीतिमा संवर्धन, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण, व्यसन-कुरीति उन्मूलन आदि। साधकों-याजकों को उसी संकल्प के साथ साधना करायी जाय। आन्दोलन की भागीदारी सुनिश्चित की जाय। दीपयज्ञ समाप्त होने पर उनकी श्रद्धा, भक्ति, क्षमता के नियोजन की व्यवस्था बनायी जाय। ***

शांतिकुंज की प्रसारण सेवाएँ
www.awgp.org
www.awgp.org/live
GayatriPariwaar या awgplive
awgpemaillist@gmail.com
@awgpskj.blogspot.com
YouTube
shantikunjvideo_Gayatri Pariwar

रचनात्मक आन्दोलनों को गति देती देश की सृजनशील तरुणाई

नर्मदा शुद्धिकरण अभियान

17 दिवसीय जनजागरण यात्रा निकाली

स्वच्छता एवं जनजागरण अभियान में जुटे परिजन एवं तीर्थयात्री

मण्डला। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार ट्रस्ट जबलपुर ने सात दिवसीय जागरण यात्रा निकालकर नर्मदा परिक्रमा करने वाले तीर्थयात्रियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। इसमें 60 कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

हर पड़ाव पर नर्मदा शुद्धिकरण अभियान से संबंधित तख्तियाँ हाथ में लेकर शोभायात्रा निकाली गई, पत्रक वितरित किए गए, दीवारों पर सद्वाक्य लिखे। तत्पश्चात घाटों पर सामूहिक स्वच्छता अभियान चलाया गया, जिसमें स्थानीय लोगों और तीर्थयात्रियों को भी शामिल करने के प्रयास किये गये।

13 फरवरी से 1 मार्च 2019 तक की यह यात्रा गायत्री शक्तिपीठ मनमोहन नगर से बस द्वारा आरंभ हुई। पहला पड़ाव सेठानी घाट होशंगाबाद था। क्रमशः ओंकारेश्वर, शूलपांडेश्वर, कठपुर, महेश्वर, भेड़ाघाट, महाराजपुर संगम, बरमान, हंडिया, झांसी घाट आदि पर पड़ाव रहे। यात्रा मार्ग पर अनेक संस्थाओं द्वारा दल का स्वागत किया गया और सैकड़ों व्यक्ति अभियान से जुड़ने के लिए संकल्पित हुए।

जिला समन्वयक श्री नरेश तिवारी, श्री रमेश पटेल, भास्कर तिवारी ,अंकुश विश्वकर्मा, मनोज विश्वकर्मा आदि का इस जनजागरण अभियान में विशेष सहयोग रहा। समापन पर कार्यकारिणी संयोजक श्री सीताराम त्रिपाठी, प्रमुख प्रबंध ट्रस्टी श्री प्रमोद राय, सहायक प्रबंध ट्रस्टी श्री सी.के. मिश्रा ने सभी का स्वागत किया।

- हडिया (हरदा) में तहसीलदार डॉ. अर्चना शर्मा ने विशेष सहयोग करते हुए नावें उपलब्ध करायीं, जिससे नदी के बीच में पुल के बड़े पायों पर शुद्धिकरण नारे लिखने में सहायता मिली।

किसान सम्मेलन एवं गौसंवर्धन संगोष्ठी

सौंसर, छिन्दवाडा। मध्य प्रदेश

तहसील सौंसर के ग्राम पंधराखेड़ी में 24 कुण्डीय शक्ति संवर्द्धन गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इसमें क्षेत्र के टिकाऊ विकास और जैविक कृषि को प्रोत्साहन देने के लिए किसान सम्मेलन एवं गौसंवर्धन संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया था, जिसमें 250 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

आँचलिक कृषि अनुसंधान केन्द्र, चंदनगाँव के वैज्ञानिक डॉ. विजय पराडकर, डॉ. भूपेन्द्र ठाकरे, डॉ. भोसले, डॉ. कटियार, मौसम विज्ञानी राजेश खौसे ने इस सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने जैविक खेती, गोमूत्र और निबौली से बने कीटनाशक, फसलों की गुणवत्ता जैसे विषयों पर कृषकों का मार्गदर्शन किया और उनके प्रश्नों के उत्तर दिये। श्री तरुण चिपडे ने पंचगव्य से शारीरिक रोगों के निवारण संबंधी जानकारी दी।

कार्यक्रम सम्पन्न कराने शांतिकुंज से श्री सुरेन्द्र वर्मा की टोली पहुँची थी। उन्होंने सम्मेलन को संबोधित करते हुए ऋषि और कृषि प्रधान देश के निर्माण के लिए श्रोताओं को प्रोत्साहित किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रज्ञापीठ कार्यवाहक श्री नारायण पाठे ने की।

शक्ति संवर्धन महायज्ञ के साथ सजल श्रद्धा -प्रखर प्रज्ञा लोकार्पण तथा प्रज्ञेश्वर महादेव की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ।

चिकित्सा शिविर, 700 मरीजों को लाभ

नागदा, उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट नागदा पर 3 मार्च को निःशुल्क होम्योपैथिक चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। इसमें 700 से अधिक मरीजों को चिकित्सा सेवा मिली। इन्दौर, उज्जैन और नागदा के 12 होम्योपैथिक चिकित्सा विशेषज्ञों ने अपने 15 पैरा मेडिकल स्टाफ के साथ सेवाएँ प्रदान कीं। ये हैं डॉ. यामिनी सोनवाने, डॉ, श्रेयांश पारेख एम. डी., डॉ. प्रशांत डोगरे, डॉ. सुरेन्द्र सिंह परिहार, डॉ. प्रीति सिंह, डॉ. प्रियंका परमार, डॉ. शुभांगी तिवारी, डॉ. अनन्या जायसवाल, डॉ, निरंजन शर्मा, डॉ. हरीश शर्मा, डॉ. सपना सुनहरे, डॉ. अंतिम बाला सोनी व डॉ. सोनू शर्मा। समापन पर श्री राकेश कुमार गुप्ता एवं श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने सभी चिकित्सकों को युग साहित्य भेंटकर सेवाओं के लिए धन्यवाद दिया।

चिकित्सा परामर्श देते चिकित्सक

नेत्र जाँच शिविर का 195 मरीजों ने लाभ लिया

भीनमाल, जालोर। राजस्थान

संस्कार विद्या मंदिर उ. प्रा. विद्यालय कुशलापुरा एवं कृष्णा नेत्र चिकित्सालय भीनमाल के संयुक्त तत्त्वावधान में 4 मार्च को संस्कार विद्या मंदिर में निःशुल्क नेत्र जाँच शिविर आयोजित हुआ। इसमें 195 रोगियों की जाँच हुई, 9 मरीजों को ऑपरेशन हेतु चयनित किया गया। जयपुर से नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. मनीष अग्रवाल एवं उनकी टीम के सहयोग से निदेशक टीकमाराम भाटी के आतिथ्य में यह जाँच सम्पन्न हुई।

भीनमाल के शिविर में आँखों की जाँच करते चिकित्सक

बंजारों के उत्थान के लिए हुआ दीपयज्ञ

नशा छोड़ने और संस्कार परम्परा से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया

भोपाल। मध्य प्रदेश

भोपाल के कोलार रोड़ स्थित बंजारी झुग्गी बस्ती में 9 मार्च को दीपयज्ञ रखा गया। इसमें झुगी-झोंपड़ियों में रहने वाले अशिक्षित व गरीब परिवारों को संस्कार परम्परा से जोड़कर सुशील-संस्कारवान बनाने के प्रयास किए गये। सभी प्रतिभागियों को सफाई के फायदे बताये गये। व्यसनों को पिछड़ेपन का मूल कारण बताते हुए उनसे दूर रहने तथा संगठित होकर आन्दोलन करने का आग्रह किया गया।

कार्यक्रम का संचालन श्री एस. पी. सिंह एवं गायत्री चेतना केन्द्र भोपाल की टोली ने किया। उन्होंने गृहे-गृहे यज्ञ अभियान में भागीदारी करते हुए हर सप्ताह यज्ञ करने और धर्ममय जीवन जीने की प्रेरणा दी। इसके लिए उन्हें एक नारियल देकर पूजन विधि भी बताई गई।

दीपयज्ञ में भाग ले रहीं बंजारी बस्ती की बहिनें और बच्चे

रक्तदान कर शहीदों को दी श्रद्धांजलि

गया। बिहार

शक्तिपीठ गया की युवा इकाई चिन्मय युवा प्रकोष्ठ ने 10 मार्च को सरहद पर तैनात वीर सैनिकों के सम्मान में 'रक्तदान महादान' के उद्घोष के साथ रक्तदान शिविर आयोजित किया। तीन घंटे चले इस शिविर का शुभारंभ कश्मीर में शहीद हो रहे जवानों को मौन श्रद्धांजलि देने के साथ हुआ। तत्पश्चात् 40 लोगों ने रक्तदान करते हुए अपने राष्ट्रप्रेम का अनुकरणीय परिचय दिया। आयोजकों ने कहा कि देश के हर व्यक्ति को एक फौजी जैसी मानसिकता के साथ अपने राष्ट्र के विकास में निष्ठापूर्वक योगदान देना चाहिए।

22 जोड़ों का सामूहिक विवाह

अनूपपुर। मध्य प्रदेश

24 एवं 25 फरवरी को इण्डोर स्टेडियम, धनपुरी में सर्वजातीय सम्मेलन एवं आदर्श विवाह समारोह सम्पन्न हुआ। इसमें मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के 22 जोड़ों का आदर्श विवाह हुआ। गायत्री परिवार ने समाज की आदर्शवादी सोच को विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभाई। बिलासपुर की श्रीमती सरोज सोनी की टोली ने विवाह संस्कार सम्पन्न कराया।

अश्वमेध यज्ञ, मुम्बई के प्रयाज में लगाये जायेंगे एक लाख पेड़

टिटवाला में 10,000 पेड़ लगाने की तैयारी

टिटवाला, ठाणे। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार मुम्बई ने जनवरी 2021 में आयोजित होने वाले अश्वमेध महायज्ञ के प्रयाज स्वरूप एक लाख पेड़ लगाने का संकल्प लिया है। महाराष्ट्र सरकार की ओर से वृक्षारोपण के लिए गायत्री परिवार को टिटवाला में 10 हेक्टेयर जमीन आबंटित की गई है।

यज्ञ संयोजक श्री मनुभाई पटेल के अनुसार 17 मार्च को इस भूमि पर वृक्षारोपण कार्य का शुभारंभ भूमिपूजन के साथ हुआ। आबंटित भूमि पर वर्षा ऋतु से पहले ही गड्ढे खोद लिये जायेंगे, जिससे बारिश के समय पौधे लगाने में सुविधा हो। वहाँ 10,000 पौधे रोपने की तैयारियाँ चल रही हैं।

छोटे-छोटे कार्यों से रखी जा रही है एक मजबूत संगठन की नींव

नाभा, पटियाला। पंजाब

पटियाला के समीपवर्ती शहर नाभा में गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्त्ता श्रीमती सोनिका अपने घर के निकट स्थित एक पार्क में पिछले 2 माह से बाल संस्कार शाला चला रही हैं। उनके मार्गदर्शन में घर-घर यज्ञ और दीपयज्ञ के अयोजन हो रहे हैं। वह निःशुल्क साहित्य वितरण का कार्य भी वे बड़े उत्साह से करती हैं।

नाभा में यज्ञ

गायत्री परिवार नाभा ने देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के परिवीक्षाधीन छात्रों से सेवाएँ लेते हुए नाभा के 6 विद्यालयों में योग प्रशिक्षण कराया। श्रीमती सोनिका सैनिकों का आत्मबल बढ़ाने हेतु लोगों को गायत्री जप करने के लिए सतत प्रेरित करती रही हैं।

पटियाला की कर्मठ कार्यकर्त्ता नेहा गुप्ता ने श्रीमती सोनिका के कार्यों को धागे-धागे जोड़कर मजबूत रस्सी बनने जैसा बताया। उन्होंने कहा कि ये कार्य नाभा में एक मजबूत शाखा स्थापित करने की दिशा में बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे।

श्रीराम स्मृति उपवन

सारंगगढ़, रायगढ़। छत्तीसगढ़

सारंगगढ़ क्षेत्र के ग्राम कोसीर (बड़े) मे श्रीराम स्मृति उपवन बनाने को लेकर 17 मार्च को जिला स्तरीय बैठक आयोजित हुई। इसमें श्री दानेश्वर शर्मा कोरबा, श्री क्षीरसागर पटेल रायगढ़, श्री केदारनाथ डनसेना, श्री रामावतार अग्रवाल सहित क्षेत्र के वरिष्ठ परिजनों ने भूमि का निरीक्षण कर उपवन निर्माण की रूपरेखा बनाई। ग्रामीणों ने यभा सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया।

सुलपाखेड़ा ग्राम में शराब बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध

ग्राम सुलपाखेड़ा में निकली नशामुक्ति रैली

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार देवास द्वारा चलाये जा रहे नशाबन्दी सप्ताह का 57वाँ कार्यक्रम ग्राम सुलपाखेड़ा में सम्पन्न हुआ। गायत्री परिवार के अथक प्रयास से गाँव में शराब बिक्री पर पूर्ण रूप से प्रतिबन्ध लगाया गया और शराब बेचने वाले पर 5000 रुपए का जुर्माना रखा गया है।

गायत्री परिवार के श्री महेश आचार्य, प्रमोद निहाले आदि युवाओं के नेतृत्व में यहाँ सर्वप्रथम रैली और प्रवचन के माध्यम से नशे की लत से होने वाले दुष्परिणामों से गाँववासियों को अवगत कराया तथा नशा त्यागने का संकल्प दिलाया। इस कार्यक्रम में गाँव के डॉ रूप सिंह नागर, गीताबाई देवड़ा, अन्तर सिंह सहित गायत्री परिजन विकास गिरि, दिलीप सोलंकी, गणेश व्यास, हजारीलाल चौहान, सालिग्राम सकलेचा व मनीष व्यास की टीम ने सहयोग किया।

गाँव-गाँव नशामुक्ति अभियान

- 57वाँ कार्यक्रम
- शराब बेचने वालों पर होगा आर्थिक जुर्माना

नारी उत्कर्ष के लिए अपनायी गई सक्रियता

प्रादेशिक महिला संगोष्ठी

गौरवशाली दायित्वों का बोध कराया

रायपुर। छत्तीसगढ़

व्यक्ति निर्माण से परिवार निर्माण और सुसंस्कारी पीढ़ी के निर्माण से अभिनव समाज निर्माण के प्रकाशमय भविष्य के महाउद्देश्य को लेकर समता कालोनी रायपुर में 18 फरवरी को प्रदेश स्तरीय महिला गोष्ठी आयोजित हुई। इसमें जिला और ब्लाक स्तर पर चल रहे 'आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी' जैसे नवनिर्माण परक प्रयासों के प्रतिवेदन प्रस्तुत किये गये तथा इन अभियानों को और अधिक व्यापक बनाने को लेकर चर्चा की गई।

गायत्री परिवार की बहन रुपाली गाँधी ने पावर पॉइंट प्रेजेन्टेशन के माध्यम से 'आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी' पर प्रशिक्षण दिया। श्रीमती आदर्श वर्मा व श्रीमती सरला कोसरिया ने नारी के 'माता' 'भगिनी' 'गृहिणी' आदि रूपों से आगे उसकी 'निर्मात्री' की अहम् भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उन्हें निर्मात्री बनने के लिए प्रेरित किया।

इस गोष्ठी में भिलाई, बलौदा बाजार, धमतरी, अभनपुन, पलारी, कन्नौज आदि कई जिलों से बड़ी संख्या में बहनों ने भाग लिया।

संस्कारी पीढ़ी के निर्माण हेतु कमर कसती जाग्रत् नारीशक्ति

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस-8 मार्च

नारी उत्कर्ष के लिए हुए प्रेरक कार्यक्रम

मुम्बई। महाराष्ट्र

दिया, मुम्बई ने इस वर्ष कपोल ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के साथ मिलकर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। कपोल विद्यानिधि इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में 'दिया' मुम्बई के कार्यकर्त्ताओं ने अपने संदेश में एक ओर वैदिक काल की युग निर्माता मातृशक्ति की गौरव-गरिमा का परिचय दिया, तो दूसरी ओर प्रगति और विकास के नाम पर अपनी मौलिक विशेषताओं को भूल रही नारी की दुर्दशा की ओर ध्यान आकर्षित किया। वक्ताओं ने कहा कि आज नारी सामाजिक बेड़ियाँ तोड़कर आगे बढ़ रही है, लेकिन सही मार्गदर्शन के अभाव में अधिकांश बहिनें स्वतंत्रता नहीं, स्वच्छंदता की ओर बढ़ रही हैं।

शिक्षा और विज्ञान की प्रगति के बावजूद नारी उत्पीड़न, कन्याभ्रूण हत्या, मानव तस्करी, नारी के फूहड़ प्रदर्शन-विज्ञापन आदि पर चिंता व्यक्त की गयी।

सेवाभावी बहिनों का सम्मान

- प्राचार्या डॉ. रेशमा हेगड़े ने अपने विद्यालय के गैर शिक्षण विभाग की बहिनों-क्लीनर, स्वीपर, चौकीदार आदि की सेवाओं की सराहना करते हुए सभी का हृदय जीत लिया।

दिया सदस्यों ने बहिनों को संस्कार, शुभ विचार देकर 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' उद्घोष को सही मायनों में चरितार्थ करने का आह्वान किया।

विद्यालय के छात्रों की सुंदर-सी प्रार्थना, दिया की प्रज्ञागीत प्रस्तुति, कविता, नृत्य, नाटक, संगीत आदि के माध्यम से नारी सशक्तीकरण का प्रभावशाली संदेश इस कार्यक्रम में दिया गया।

प्राचार्या महोदया ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के परिणामों की घोषणा की। उन्होंने विद्यार्थियों के मन को सुविचारों के साँचे में ढालने के लिए गायत्री परिवार द्वारा किये जा रहे प्रयासों की उपयोगिता भी बताई।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में महिला मण्डल की प्रशंसनीय सक्रियता

340 घरों में देवस्थापना

ग्रेटर नोएडा। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

महिला मण्डल ग्रेटर नोएडा के संगठित, समर्पित प्रयासों को दिसम्बर से फरवरी 19 तक के तीन माह में उल्लेखनीय सफलता मिली। मण्डल कार्यवाहक श्रीमती उषा चौधरी के अनुसार इन तीन माह में 340 देवस्थानाएँ हुईं। दादरी एवं महेन्द्र ओरा सोसाइटी गुरुग्राम में पाँच कुण्डीय एवं महादेव मंदिर डेल्टा-1 में नौ कुण्डीय यज्ञ के सामूहिक यज्ञ के अलावा घर-घर यज्ञ, संस्कार, दीपयज्ञों की शृंखला निरंतर चल रही है, जिनके अंतर्गत ये देव स्थापानाएँ कराई गई हैं। अधिकांश देवस्थापनाएँ सीआरपीएफ कैम्प, बीएसएफ सोसायटी, सूत्याना गाँव, सीनियर सिटिज़न्स सोसायटी, मयूर विहार एवं ग्रुरुग्राम में हुईं।

24 बहिनों द्वारा अनुष्ठान

बहिनों में सक्रियता की यह उमंग साधना के बल से ही आई है। 24 बहिनों ने हर माह लघु अनुष्ठान करने का वार्षिक संकल्प लिया है। सैकड़ों भाई-बहिनों को नियमित साधना अभियान में जोड़ा गया है। कई विद्यालयों में बच्चों से मंत्रलेखन साधना कराई जा रही है।

सिलाई प्रशिक्षण

तीन माह में 10 गरीब बहिनों को सिलाई एवं ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण दिलाया, जिससे वे अपने पाँवों पर खड़ी हो सकीं।

योग प्रशिक्षण

बीटा-1 के पार्क में चलाये जा रहे नियमित योग के कार्यक्रम ने भी 15-20 बहिनों को गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया है।

बुजुर्गों ने की पारिवारिक आत्मीयता की अनुभूति

वृद्धाश्रम पहुँचकर 'सुख बाँटो-दुःख बँटाओ' सूत्र को चरितार्थ किया

आजमगढ़। उत्तर प्रदेश

माँ गायत्री धाम 'प्रज्ञापीठ' रानी की सराय महिला मण्डल की बहिनों ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर अपनी आत्मीयता और भाव संवेदनाओं का परिचय दिया। सभी बहिनें महिला मण्डल संचालिका श्रीमती कमला शर्मा के नेतृत्व में अराजीबाग स्थित वृद्धाश्रम गयीं। वहाँ परम पूज्य गुरुदेव-वंदनीया माताजी के दिये सूत्र 'सुख बाँटो-दुःख बँटाओ' को चरितार्थ करते हुए बुजुर्गों की सेवा की और उन्हें जीवनोपयोगी वस्तुएँ प्रदान कीं।

महिला मण्डल की श्यामबाला राय, विद्या गुप्ता, अम्बुज गुप्ता, रीता पाण्डेय सहित सभी बहिनों ने यथाशक्ति भोजन के पैकेट, साड़ी, बनियान, गमछे, धोती और मिष्ठान्न भेंट किये। बुजुर्गों को उनके सुख-दुःख में साथ होने का आश्वासन दिया।

गायत्री परिवार से प्यार और अपनापन पाकर सभी बुजुर्ग भावविभोर थे। वृद्धाश्रम के अधीक्षक डॉ. सुधीर राय ने कहा कि आज के समय में जहाँ बुजुर्गों की उपेक्षा आम हो चली है, ऐसे में गायत्री परिवार पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा जी के बनाये 'परिवार' के वास्तविक स्वरूप को उभार रहा है। यह परिवार यज्ञभाव के साथ त्याग और आत्मीयता विस्तार को मूर्त रूप दे रहा है, जो कि अत्यन्त गौरव की बात है।

विसंगतियों की चर्चा, जैसी बीमारी वैसी दवा

महराजगंज। उत्तर प्रदेश

मुखलिसपुर (संत कबीर नगर) एवं बृजमनगंज (महराजगंज) में 24 कुण्डीय यज्ञ एवं पावन प्रज्ञा पुराण कथा के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। शांतिकुंज से पहुँची ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली ने युगऋषि का संदेश दिया। प्रज्ञा पुराण कथा के अन्तर्गत उन्होंने नारी जीवन से जुड़ी अनेक विसंगतियों की चर्चा की। कन्याभ्रूण हत्या, नारी शिक्षा, फैशन-प्रदर्शन, दहेज जैसी अनेक सामाजिक बीमारियों को उन्होंने उकेरा और युग निर्माणी दृष्टिकोण के साथ उनके समाधान सुझाये। जैसी बीमारी वैसी दवा का उल्लेख करते हुए संगठित होकर उन्हें दूर करने का आह्वान स्थानीय बहिनों से किया।

परम्परानुसार दोनों ही कार्यक्रमों की कलश-शोभायात्रा और दीपयज्ञ प्रमुख आकर्षण रहे। श्रीमती शोभा गौर के नेतृत्व में श्रीमती सविता पटेल, प्रतिभा पटेल, मंजू पाटीदार एवं चम्पा सलाम की टोली कार्यक्रम सम्पन्न कराने पहुँची थी।

फलती-फूलती संस्कार परम्परा

64 गर्भ संस्कार हुए

घाटोल, बाँसवाड़ा। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ घाटोल पर 19 फरवरी को विशाल संस्कार महोत्सव सम्पन्न हुआ। राजस्थान जोन प्रभारी श्री दिनेश पटेल एवं श्री जसवीर सिंह की प्रभावशाली प्रेरणाओं से इस कार्यक्रम में संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन के प्रयासों को शानदार सफलता मिली। आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी एवं बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया। परिणाम स्वरूप 64 बहिनों के पुंसवन संस्कार के अलावा बड़ी संख्या में नामकरण एवं विद्यारंभ संस्कार हुए।

इस कार्यक्रम में दूर-दराज के गाँव परतापुर, जौलाना, बाँसवाड़ा, बड़ोदिया, खमेरा, बड़ीपडाल आदि से लोग आये थे। सर्वश्री हीरालाल पंचाल, नरेन्द्र कुमार मेहता, डॉ. सुन्दरलाल पंचाल, अम्बालाल पंचाल सहित समस्त कार्यकर्त्ताओं ने बड़ी निष्ठा के साथ अपनी जिम्मेदारियाँ निभाईं। पूर्व सरपंच श्री राजेन्द्र सोनी का विशिष्ट योगदान रहा।

धार्मिक संकीर्णताओं से बँधे नहीं हैं मानवीय उत्कर्ष के सूत्र-सिद्धांत

20 पुंसवन संस्कार हुए, 6 बहिनें मुस्लिम थीं

गुना। मध्य प्रदेश

12 मार्च को स्थानीय शाखा द्वारा मातापुरा विद्यालय, गुना में सामूहिक पुंसवन संस्कार समारोह आयोजित किया गया। इसमें 20 गर्भवती बहिनों ने संस्कार कराया, जिनमें 6 बहिनें मुस्लिम थीं। सभी ने गर्भस्थ शिशु के शारीरिक, मानसिक विकास के लिए आवश्यक सूत्रों को बड़ी श्रद्धा के साथ हृदयंगम किया, तद्नुसार अपने आहार, विहार, विचारों को ढालने का संकल्प लिया। पूरे विधि-विधान के साथ यज्ञ-संस्कार कराते हुए अपनी-अपनी मान्यताओं के अनुरूप अपने इष्टदेव से शिशु को संस्कारवान बनाने की भावभरी प्रार्थना की।

कार्यक्रम का संचालन उपजोन समन्वयक श्री आर.पी. सोनी एवं शक्तिपीठ गुना के पुरोहितों की टोली ने किया। श्री सोनी जी ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव के मानवमात्र के लिए कल्याणकारी विचारों के प्रति समाज के हर वर्ग का बढ़ता आकर्षण उज्ज्वल भविष्य की स्थापना का शुभ संकेत है।

अवांछनीयताओं के विरुद्ध जागरूकता अभियान

करनडीह गाँव में महिला मण्डल का जागरूकता अभियान

जमशेदपुर। झारखण्ड

महिला मंडल टाटानगर ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाते हुए 8 मार्च को कई रचनात्मक कार्य किये। कांड्रा स्थित करनडीह गाँव में नारी जागरण एवं नशामुक्ति कार्यक्रम हुआ। श्रीमती जसवीर कौर ने नारियों एवं युवाओं से तमाम अवांछनीयताओं के खिलाफ जागरूक होने, नशे का बहिष्कार करने तथा समाज निर्माण हेतु आगे आने का आग्रह किया। इस विषय संबंधी साहित्य भी युवाओं में वितरित किया गया। 50 घरों में देव स्थापना कराईं तथा सद्वाक्यों के स्टीकर चिपका कर उन्हें रोज पढ़ने और जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्णिमा सिंह, रेखा शर्मा, वासंती देवी, उषा वर्मा, आशा शर्मा, शीला सिंह, अमर सिंह, श्याम नारायण, श्वेता मोदी आदि ने अहम् भूमिका निभाई। जरूरतमंद बच्चों में बिस्कुट, चॉकलेट, जूते-मोजे, कपड़े व चावल आदि सामग्रियाँ दी गईं।

बहिनें करा रही हैं बड़े-बड़े कार्यक्रम

कैलारस, मुरैना। मध्य प्रदेश

कैलासर शाखा ने 28 फरवरी से 3 मार्च की तारीखों में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न कराया। इस कार्यक्रम की संयोजक-संचालक एडवोकेट शारदा शर्मा, मीरा गुप्ता, मालती गुप्ता आदि बहिनें ही थीं। कार्यक्रम में 40 श्रद्धालुओं ने दीक्षा ली। महिला मण्डल के बढ़ते पुरुषार्थी चरणों को श्री महेशदत्त शर्मा, श्री रामाधार सिंह तोमर आदि प्रोत्साहन और सहयोग प्रदान करते रहे।

इससे पूर्व मुरैना जिले के पोरसा में अक्टूबर माह में 108 कुण्डीय यज्ञ एवं जनवरी माह में जौरा में 24 कुण्डीय यज्ञों के सफल और शानदार आयोजन सम्पन्न हो चुके हैं।

'माता भगवती देवी भोजन सेवा' का शुभारंभ

लखीमपुर। उत्तर प्रदेश

'आत्मवत् सर्वभूतेषु' और 'वसुधैव कुटुंबकम्' जैसे सूत्रवाक्यों को जीवन में आत्मसात करते हुए शक्तिपीठ लखीमपुर से जुड़ी बहिनों ने 'माता भगवती देवी भोजन सेवा' का शुभारंभ किया है। विश्व महिला दिवस से आरंभ की गई इस सेवा के संचालन के लिए महिला मंडल की बहिनों ने अपने-अपने दिन निर्धारित कर लिये हैं। 8 मार्च को गोला रोड स्थित श्री वेदमाता गायत्री शक्तिपीठ पर मिलकर भोजन तैयार किया, लंच पैकेट बनाए गये और जिला चिकित्सालय में जरूरतमंदों में वितरित किया।

जिला स्तरीय महिला सम्मेलन

जोबट, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

3 मार्च को गायत्री शक्तिपीठ जोबट पर जिला स्तरीय महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि बड़वानी के पूर्व उपजोन प्रभारी श्री के.सी. शर्मा ने इसे संबोधित करते हुए बाल विवाह, स्वावलम्बन, फैशन, जातिभेद जैसी सामाजिक विकृतियों के निवारण के लिए जागरूकता अभियान चलाने की प्रेरणा दी।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता जिला समन्वयक श्री संतोष कुमार वर्मा ने की। उन्होंने नारी जागरण के साथ सामाजिक उत्कर्ष के लिए गृहे-गृहे यज्ञ, कन्या कौशल शिविर, गर्भोत्सव, नवदम्पती सम्मेलन जैसे कार्यक्रम व्यापक स्तर पर कराये जाने का आह्वान किया।

गायत्री चेतना केन्द्र, मुनस्यारी (उत्तराखंड)

साधकों की संख्या बढ़ाने के लिए श्रद्धेय डॉ. साहब का विशेष प्रवास

मुनस्यारी, पिथौरागढ़। उत्तराखंड

गायत्री चेतना केन्द्र, मुनस्यारी अखिल विश्व गायत्री परिवार का वह अभिनव साधना एवं स्वावलम्बन प्रशिक्षण केन्द्र है, जहाँ देवात्मा हिमालय की दिव्यता, महानता, शीतलता का सीधा साक्षात्कार होता है। इस अलौकिक अनुभूति में चेतना केन्द्र की आध्यात्मिक ऊर्जा और साधकोचित मनोभूमि का विशेष योगदान है। जिन्हें भी इसका अनुभव करने का अवसर मिला, मंत्रमुग्ध हो गए।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी 23 से 26 मार्च तक मुनस्यारी के विशेष प्रवास पर थे। वहाँ से लौटकर शांतिकुंज में चल रही राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार के हर साधक को इस दिव्यता के दर्शन का लाभ लेना ही चाहिए।

नवरात्र से साधना सत्र आरंभ

मुनस्यारी में साधना सत्रों की शृंखला चैत्र नवरात्रि से आरंभ हो गई है, लेकिन इस शृंखला के सभी सत्रों के स्थान भर चुके हैं। केन्द्र पर अधिक साधकों के लिए व्यवस्थाएँ बनाई जा रही हैं। स्थान उपलब्ध होने पर परिजनों से आवेदन करने की सूचना प्रज्ञा अभियान में दी जायेगी।

शांतिकुंज द्वारा पिछले दो वर्षों से वहाँ पाँच दिवसीय साधना शिविर चलाये जा रहे हैं। लेकिन जैसे ही शिविर की तिथियाँ निर्धारित होती हैं, शीघ्र ही सारे सत्र भर जाते हैं। साधकों की संख्या और उत्साह को देखते हुए वर्तमान में वहाँ बहुत कम साधकों (मात्र 30) के लिए साधना की सुविधा ही उपलब्ध है।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का यह प्रवास साधकों की संख्या बढ़ाने के लिए आवश्यक व्यवस्थाएँ बनाने के संदर्भ में हुआ। उनके साथ सभी संबद्ध विभागों के सहयोगी साथ थे। व्यवस्था एवं भोजनालय प्रभारी श्री विष्णु मित्तल, निर्माण विभाग प्रभारी श्री गौरीशंकर सैनी सहित जलकल विभाग, बिजली विभाग के प्रतिनिधि और शांतिकुंज के कई कार्यकर्त्ता साथ थे।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने दो दिनों तक स्वयं यज्ञ, साधना, भोजन, भ्रमण करते हुए परिस्थितियों की बारीकियों को समझा। उन्होंने वहाँ की व्यवस्था देख रहे श्री पचौरी जी, श्री दयाराम जी एवं श्री बिंजोला जी से भी विस्तार से चर्चा की। बर्फबारी जैसी कठिन परिस्थितियों में भी उनकी लगन एवं परिश्रम की प्रशंसा की, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन दिया।

चेतना केन्द्र मुनस्यारी पर अब शिविरार्थियों की संख्या 30 से बढ़ाने के लिए आवश्यक व्यवस्थाएँ की जा रही हैं। श्रद्धेय डॉ. साहब ने इसके लिए आवश्यक निर्देश दिये और तत्काल कार्य आरंभ भी कर दिया गया। शीघ्र ही सारी व्यवस्थाएँ बना ली जायेंगी, ताकि अधिक साधकों को वहाँ साधना का अवसर मिल सके। इस प्रवास में सर्वश्री राजकुमार वैष्णव, संतोष सिंह, उमाशंकर, अरुण तोमर एवं श्री अजय जी भी गये थे।

श्रद्धेय डॉ. साहब गायत्री चेतना केन्द्र मुनस्यारी पर यज्ञ करते हुए एवं दायें व्यवस्थाओं का निरीक्षण करते हुए

होली पर्व पर दिया विकृतियों को मिटाने, प्रेमभाव बढ़ाने का संदेश

मानसरोवर, जयपुर की अश्लीलता निवारण रैली

जतारा शाखा ने जलाई अश्लील पोस्टर, साहित्य की होली

मरीज़ों को भोजन कराते लखीमपुर शाखा के परिजन

जयपुर (राजस्थान) की मानसरोवर शाखा ने होली पर मानसरोवर स्टेडियम से वी. टी. रोड स्थित गायत्री चेतना केन्द्र तक विशाल जन जागरण रैली निकाली। इसके माध्यम से उन्होंने संदेश दिया कि होलिका दहन के साथ-साथ समाज में फैले अनाचार, अश्लीलता, नशे की आदत जैसी विकृतियों को भी जला देना चाहिए। इस रैली में 200 कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों ने भाग लिया।

गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) के युवा मण्डल ने जन जागरुकता रैली निकाल कर अश्लीलता निवारण का संदेश दिया। रंगों का त्यौहार पूरी शालीनता के साथ मनाया गया, जिसमें वैर मिटाने और प्रेम बढ़ाने का संदेश था।

रायगढ़ (छत्तीसगढ़) के युवाओं ने जिन्दल स्टील एण्ड पावर लिमिटेड हिल ब्यू कॉलोनी रायगढ़ में प्लांट के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ होलिका दहन का कार्यक्रम यज्ञीय प्रेरणाओं के साथ सम्पन्न किया।

भोपाल और जतारा, जिला टीकमगढ़ के परिजनों ने भी अपने-अपने नगरों में होली पर्व को 'अश्लीलता निवारण दिवस' के रूप में मनाया और अश्लील चित्र, अश्लील पोस्टर, अश्लील संगीत की सीडी, गन्दे साहित्य की होली जलाई। समाज में व्याप्त कुरीति, मूढ़ मान्यताएँ, व्यसन-फैशन जैसी विकृतियों को दूर कर स्वस्थ, समुन्नत समाज की रचना में सहयोगी बनने का आह्वान किया गया।

लखीमपुर खीरी (उत्तर प्रदेश) के युवाओं ने जिला अस्पताल जाकर मरीज़ों और और उनके परिचारकों के साथ होली पर्व मनाया। उन्हें गुलाल का तिलक लगाकर शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की, उन्हें भोजन कराते हुए पारिवारिकता का अहसास कराया।

अपने धर्म-अपनी संस्कृति में लौटे 21 परिवार

मान्यताएँ बदलीं

गोंदिया। महाराष्ट्र

राजनादगाँव, छत्तीसगढ़ की टोली ने 10 मार्च को गोंदिया में 5 कुण्डीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया। इसमें छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र दोनों प्रान्तों के श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस यज्ञ में अन्य धर्मावम्बियों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया।

श्री जुगल किशोर लढ्ढा, व्यवस्थापक शक्तिपीठ राजनांदगाँव के अनुसार 21 ईसाई परिवारों द्वारा हिन्दू धर्म में लौट आना इस कार्यक्रम की एक चमत्कारिक उपलब्धि रही। बिना किसी ऐसी प्रेरणा या प्रोत्साहन के वे स्वेच्छा से अपने धर्म में लौटे थे। परम पूज्य गुरुदेव के सर्वहितकारी विचारों का ही प्रभाव था कि हिन्दू धर्म के प्रति उनकी मान्यताएँ बदलीं। धर्म की वैज्ञानिकता को समझा और अपनी सनातन संस्कृति के प्रति पुनः आस्था जागी।

गोंदिया में यज्ञ कराती राजनांदगाँव की टोली

यज्ञ का संचालन श्री टिकेन्द्र सिंह ठाकुर, ब्रह्मानन्द, क्षत्रपाल, सुकमन आदि भाइयों ने किया। इसे सफल बनाने में तरुपुत्र साधना मण्डल के भाई-बहिनों ने सहयोग किया।

गृहे-गृहे यज्ञ अभियान से जुड़ी मुस्लिम बहिनें

शाजापुर। मध्य प्रदेश

17 मार्च रविवार को शाजापुर जिले के मंगललाज गांव में 80 घरों में एक साथ यज्ञ हुआ। 'गृहे-गृहे यज्ञ-उपासना' अभियान के मध्य प्रदेश प्रांत के प्रभारी श्री रमेश नागर ने इन सामूहिक प्रयासों की सफलता पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि सागर में आयोजित प्रांतीय युवा सम्मेलन के बाद पूरे प्रदेश में यह अभियान तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। उन्होंने बताया कि प्रदेश के 52 में से 36 जिलों में यह अभियान चल पड़ा है। सीहोर और गुना जिलों में भी अभियान तेजी से बढ़ा है।

उत्साह की बात यह है कि यज्ञ-उपासना की महत्ता को समाज का हर वर्ग समझ रहा है। प्रगतिशील मानसिकता वाले मुस्लिम श्रद्धालु भी यज्ञ में भाग ले रहे हैं। सामूहिक यज्ञ से पूर्व व्यसन-कुरीतियों के विरुद्ध शोभायात्राएँ भी निकाली जाती हैं। श्री रमेश नागर के अनुसार 2 जून-परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस पर दो लाख घरों में एक साथ एक समय पर गायत्री यज्ञ कराने के केन्द्रीय लक्ष्य को देखते हुए गृहे-गृहे यज्ञ अभियान को प्रदेश के हर ब्लॉक स्तर तक लोकप्रिय बनाने के प्रयास तेजी से किये जा रहे हैं।

इंजीनियरिंग कॉलेज में योग एवं ध्यान सत्र

इचलकरंजी, जिला कोल्हापुर (महाराष्ट्र) की गायत्री परिवार शाखा ने 26-27 फरवरी को द्वारा स्थानीय डीकेटीई टेक्सटाइल एंड इंजिनियरिंग कॉलेज में विद्यार्थियों के लिए योग व ध्यान सत्र का आयोजन किया। प्रथम वर्ष इंजीनियरिंग के लगभग 500 छात्र -छात्राओं ने इसका लाभ लिया।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

श्रीमती यशोदा सोनवानी, भिलाई। छ.ग.

प्रज्ञा मण्डल जवाहर नगर की संचालिका श्रीमती यशोदा सोनवानी का 20 मार्च को 57 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे अपने पति श्री चिंताराम सोनवानी और बच्चे पीयूष, चंद्रकला एवं ऋतु के साथ अपने आप में एक समर्थ टोली थीं, जिनकी कमी उनके परिवारी जनों के साथ गायत्री परिवार को भी खूब खलेगी।

श्री श्याममुरारी गोयल, लखनऊ। उ.प्र.

श्याममुरारी गोयल

गायत्री ज्ञान मन्दिर इन्दिरा नगर के वरिष्ठ ट्रस्टी श्री श्याम मुरारी गोयल का 7 मार्च को निधन हो गया। उन्होंने गायत्री ज्ञान मंदिर के वाङ्मय स्थापना का शुभारम्भ अपनी ओर से विधानसभा, उत्तर प्रदेश में स्थापना कराकर किया था। उन्होंने अपने नेत्र केजीएमसी मेडिकल कॉलेज को दान किये थे।

श्री बी.ए. शिवशंकरण, गोंदिया। महा.

गायत्री परिवार गोंदिया के सक्रिय कार्यकर्ता श्री वी.ए. शिवशंकरण का 81 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। वे 1981 से मिशन की सेवा कर रहे थे। उन्होंने कई पुस्तकों का अंग्रेजी और मलयालम भाषा में अनुवाद किया है।

बीना चौधरी, पुरकाजी, रुड़की। उत्त.

गायत्री ज्ञान मन्दिर पुरकाजी पर सेवारत स्वयंसेविका बीना चौधरी जी का 12 मार्च 2019 को देहान्त हो गया। उन्होंने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री विद्याभूषण प्रसाद, सीवान। बिहार

विद्याभूषण प्रसाद

इन्द्रासनपुरी कागजी मोहल्ला, सीवान के निवासी कार्यकर्ता श्री विद्याभूषण प्रसाद का 84 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। उन्होंने लम्बे समय तक साहित्य केन्द्र का संचालन किया।

डॉ. जगलाल प्रसाद, सीवान। बिहार

डॉ. जगलाल प्रसाद

सीवान के कर्मठ कार्यकर्ता डॉ. जगलाल प्रसाद का 6 मार्च 2019 को स्वर्गवास हो गया। उन्होंने कई व्यक्तियों को मिशन से जोड़ा तथा पत्रिकाओं के सदस्य बनाये।

ऐसे आमोद-प्रमोद को धिक्कार है जो आसपास के समाज के आँसुओं की अनदेखी करते हुए मनाया जा रहा हो।

युगशक्ति गायत्री और यज्ञों के प्रभाव से बदल रहा है समाज

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के प्रति न्यायविदों की आस्था

108 कुंडीय श्रद्धा संवर्धन गायत्री महायज्ञ
दमोह में नौ और हिण्डौन सिटी में कई न्यायविदों ने भाग लिया

दमोह। मध्य प्रदेश

स्थानीय शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय मैदान पर सम्पन्न 108 कुंडीय श्रद्धा संवर्धन गायत्री महायज्ञ नगर के अनेक प्रतिष्ठित गणमान्य एवं सैकड़ों युवाओं का ध्यान आध्यात्मिक उत्कृष्टता के प्रति आकर्षित करने में सफल रहा। दूसरे दिन प्रथम चरण में डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट एस एस रघुवंशी ने सपत्नीक ध्वजारोहण एवं दीप प्रज्वलन सहित पूजा-अर्चना की। जिला न्यायालय में पदस्थ 9 ए डी जे एवं न्यायाधीश गणों ने सपत्नीक पीले धोती कुर्ते पहन कर यज्ञ में भागीदारी की। जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष पंकज खरे ने भी सपत्नीक सहभागिता की।

इससे पूर्व कार्यक्रम के भूमिपूजन समारोह में सागर संभाग के संभाग आयुक्त श्री मनोहर दुबे जी, जिला कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक, नगरपालिका अधीक्षक आदि अनेक गणमान्य उपस्थित रहे। सभी ने गायत्री परिवार के व्यक्ति और समाज को बदलने के बुनियादी प्रयासों की सराहना की।

कार्यक्रम के प्रयाज स्वरूप निकाली गई वाहन रैली अत्यंत प्रभावशाली रही। जोन प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री विष्णु भाई पंड्या जी का 'ईश्वर पर विश्वास' विषय पर दिया गया उद्बोधन लोगों को झंकृत कर गया। डॉ. अशोक ढोके ने युवा सम्मेलन को संबोधित किया, जिसमें लगभग 800 युवाओं ने भाग लिया और वे विशेष रूप से प्रभावित हुए।

350 श्रद्धालुओं ने दीक्षा ली

हिण्डौन सिटी, करौली। राजस्थान

26 फरवरी से 1 मार्च तक की तारीखों में आयोजित 108 कुण्डीय यज्ञ में राजस्थान उच्च न्यायालय जोधपुर के रजिस्ट्रार जनरल श्री सतीश कुमार शर्मा, विधि विभाग के प्रमुख शासन सचिव श्री महावीर प्रसाद शर्मा, जिला न्यायाधीश श्री डीपी शर्मा, श्री बृजलाल मीणा , श्री सतीश चंद्र कौशिक सहित अनेक गणमान्यों ने बड़ी श्रद्धा-निष्ठा के साथ भाग लिया। श्री कौशिक ने कहा कि मानवता को सन्मार्ग दिखाना, जीवन की नकारात्मकता दूर कर लोगों को सृजनात्मक कार्यों में लगाना ही आज का सबसे बड़ा पुण्य है। जिला कलेक्टर सहित कई प्रशासनिक अधिकारी और गणमान्य भी यज्ञ में शामिल हुए।

श्री बहादुर सिंह सोलंकी के अनुसार कार्यक्रम का शुभारंभ विशाल कलश यात्रा के साथ हुआ, जिसमें 5000 बहिनों ने भाग लिया। इस यज्ञ में 350 लोगों ने दीक्षा ली, 25 पुंसवन संस्कार हुए। यज्ञ से पूर्व महू, चन्दीला बाई, हुक्मीखेड़ा, सूरौठ, महावीर जी आदि अनेक गाँवों का मंथन किया। सर्वश्री वेदप्रकाश बंसल, मुकेश गोयल, शिवराम, मानसिंह, जगदीश गौड़ आदि की प्रशंसनीय भूमिका रही।

हिण्डौन सिटी की कलश यात्रा में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

वाणिज्य कर अधिकारी ने प्रस्तुत किया वैवाहिक आदर्श

हिण्डौन सिटी के महायज्ञ में वाणिज्य कर अधिकारी श्री विवेक बंसल ने अपना विवाह पूरी सादगी से सम्पन्न कराते हुए समाज के समक्ष अत्यंत प्रेरणाप्रद आदर्श प्रस्तुत किया। प्रबुद्ध युवा दम्पती के आदर्शोन्मुख कदमों को युग पुरोहितों सहित उपस्थित हजारों लोगों ने करतल ध्वनि से सराहा।

युवा बदलेंगे तो देश बदलेगा

108 कुण्डीय यज्ञ का मुख्य आकर्षण-युवा सम्मेलन

सीकर। राजस्थान

21 से 24 फरवरी तक सीकर में आयोजित 108 कुंडीय शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञ ने अपने क्षेत्र में वर्तमान समय की सामाजिक समस्याओं और मिशन के रचनात्मक आन्दोलनों को बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। इसकी भव्य कलश यात्रा में पर्यावरण संरक्षण, बेटी बचाओ अभियान, नशा मुक्ति अभियान, सजीव योग सहित अनेक प्रकार की झाँकियां सजाई गई थीं। सुश्री गरिमा लाटा, एस.डी.ओ. सीकर ने इसका शुभारंभ करते हुए गायत्री परिवार के नवचेतना जागरण के प्रयासों को प्रोत्साहित किया।

दूसरे दिन आयोजित सीकर व झुंझुनूं जिलों का युवा सम्मेलन कार्यक्रम का विशिष्ट आकर्षण था। शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह ने इसे संबोधित किया। उन्होंने कहा कि युवाशक्ति ही राष्ट्र का पर्याय है। देश को बदलना है तो हमें युवाओं को बदलना होगा। उनकी मन, विचार और जीवनशैली को बदलकर उन्हें सृजनशील और स्वावलम्बी बनाना होगा।

शांतिकुंज से पहुँची श्री परमेश्वर जी साहू की टोली ने युगऋषि की प्रेरणाओं को रामचरित मानस की चौपाइयों के साथ गूँथकर जन-मन में सरसता का संचार किया। दीपयज्ञ के समय जिला कलेक्टर श्रीमान नरेश ठकराल, सीकर सांसद श्रीमान सुमेधानंद सरस्वती एवं अनेक गणमान्यों की उपस्थिति उत्साहवर्धक रही। 24 फरवरी को मुख्य अतिथि राजस्थान गौसेवा समिति प्रदेशाध्यक्ष महंत दिनेश गिरी जी महाराज ने यज्ञ आदि पवित्र कार्यों से उत्पन्न आध्यात्मिक शक्ति पर प्रवचन किया।

कार्यक्रम से पूर्व वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा ने शक्ति कलश के माध्यम से समस्त क्षेत्र का मंथन किया। श्री अभिनव शर्मा के अनुसार सभी कार्यकर्त्ताओं ने यज्ञभाव के साथ व्यवस्थाओं में जो सहयोग दिया, उसका भी श्रद्धालुओं पर सुंदर प्रभाव दिखाई दिया।

राष्ट्र रक्षार्थ यज्ञ

राष्ट्रीय चुनौतियों की ओर ध्यानाकर्षण, शहीदों को श्रद्धांजलि

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश

हिमगिरि महिला मण्डल मुरादाबाद ने 24 फरवरी को राष्ट्र को सुरक्षित और सशक्त बनाने की कामना-प्रार्थना के साथ 5 कुण्डीय यज्ञ किया। मिशन के सुप्रसिद्ध कवि श्री शचीन्द्र भटनागर ने इसका संचालन करते हुए विषयानुरूप प्रेरणाएँ प्रदान कीं। इस यज्ञ में राष्ट्र को समर्थ-सशक्त बनाने के लिए विशेष मंत्रों के साथ आहुतियाँ प्रदान की गईं और पुलवामा में शहीद हुए जवानों को श्रद्धांजलि स्वरूप आहुतियाँ भी दी गईं।

श्री भटनागर जी ने पर्यावरण संरक्षण पर सर्वाधिक बल दिया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण भारत ही नहीं सारे विश्व का सबसे बड़ा संकट है। कल तक घर-आँगन में जो पक्षी चहचहाते दिखाई देते थे, वे आज पर्यावरण संकट के कारण नदारद हैं। मनुष्य का जीवन भी इसी तरह संकट में घिरता जा रहा है, हम पर्यावरण की अनदेखी कर सामूहिक आत्महत्या की ओर बढ़ रहे हैं।

श्री भटनागर जी ने पर्यावरण संरक्षण और गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान को गतिशील करने के लिए प्रेरणा दी। श्रीमती मधु कपूर, संतोष नारंग, मृदुला त्यागी, सविता भटनागर, मधु विश्नोई, पुष्पलता, सोन देवी गुप्ता, प्रीति मिश्रा, भाग्यवती मौर्य हिमगिरि कॉलोनी वासियों के साथ यज्ञ में विशेष रूप से सक्रिय रहीं।

मुरादाबाद में यज्ञ संचालन करते श्री भटनागर एवं श्रीमती मधु कपूर

211 श्रद्धालुओं ने नशा छोड़ा, अनेक आन्दोलनों को गति मिली

- 65000 का साहित्य बिका
- 282 दीक्षा संस्कार हुए
- 500 पौधे बाँटे गये

पथरौटा, इटारसी। मध्य प्रदेश

पथरौटा में गायत्री परिवार द्वारा 31 जनवरी से 3 फरवरी की तारीखों में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित किया गया। इसमें 6500 श्रद्धालुओं ने भाग लिया। यह कार्यक्रम इतने भव्य रूप से सम्पन्न हुआ कि कलश यात्रा से पूर्णाहुति तक के चारों दिन समग्र यज्ञ परिसर आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत रहा।

यज्ञ संचालन श्री देवता प्रसाद शर्मा जी की टोली ने किया। उन्होंने यज्ञ, गायत्री, संस्कार परम्परा तथा जीवन जीने की कला पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया।

महायज्ञ में समिति की ओर से 50% छूट पर साहित्य उपलब्ध कराया गया जिससे उत्साहित होकर साहित्यप्रेमियों ने 65 हजार मूल्य का साहित्य खरीदा।

संस्कारों में 282 दीक्षा, 125 विद्यारम्भ, 18 पुंसवन सहित 35 अन्य संस्कार हुए। 211 लोगों ने नशा छोड़ने के संकल्प लिये। यज्ञ प्रसाद के रूप में 500 फलदार पौधे निःशुल्क वितरित किये गये।

पथरौटा में यज्ञ संचालन करते शांतिकुंज प्रतिनिधि

असम में युगशक्ति गायत्री का बढ़ता प्रभाव

विशाल धर्मसभा में प्रतिनिधित्व

दलंग, कामरूप। असम

दलंग में 16 से 20 फरवरी तक विष्णु पूजा महोत्सव का आयोजन हुआ। इसमें 8 हजार धर्मप्राण लोगों ने भाग लिया। दूर-दूर से अनेक विद्वान, चिंतक, मनीषियों और आलोचकों को इस विशाल धर्मसभा में आमंत्रित किया गया था।

गायत्री चेतना केन्द्र, गुवाहाटी के प्रतिनिधि श्री क्षीरोदेश प्रसाद को भी आमंत्रित किया गया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बतायी 'धर्म' की व्याख्या करते हुए कहा कि धर्म जीवन के लिए उसी तरह जरूरी है जैसे जीने के लिए श्वास। उन्होंने कहा कि वास्तविक धर्म वह है जो हवा और पानी की तरह सबके लिए सुगम, सहज और निर्विवाद हो।

अत्रिघाट चाय बगान में प्रज्ञापुराण कथा

गायत्री चेतना केन्द्र गुवाहाटी के संचालन में अत्रिघाट चाय बगान, उदालगुड़ी में 11 से 13 फरवरी तक श्रीमद् प्रज्ञापुराण कथा एवं 5 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। सैकड़ों श्रद्धालुओं ने पूर्वोत्तर की समृद्धि के लिए आहुतियाँ समर्पित की । गर्भ पूजन, विद्यारंभ, यज्ञोपवीत, दीक्षा और विवाह आदि संस्कार संपन्न हुए। अंतिम संध्या पर दीपयज्ञ के अवसर पर हजारों जलते दीपों की साक्षी में श्रद्धालुओं ने अपने जीवन की उत्कृष्टता के लिए उपासना, साधना, बलिवैश्व, संस्कार जैसे श्रेष्ठ कार्यों को अपनाने और बुराइयाँ त्यागने के संकल्प लिये।

ताम्रेश्वर देवालय उदालगुड़ी में कथा

खैराबाड़ी जिले के उदालगुड़ी स्थित ताम्रेश्वर देवालय में तीन दिवसीय नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ तथा श्रीमद् प्रज्ञापुराण कथा का आयोजन हुआ। ठाकुरियापारा, खैराबाड़ी एवं उदालगुड़ी के विभिन्न चाय बागानों के स्वयंसेवियों द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में भी भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। श्री क्षीरोदेश प्रसाद ने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित 19वें पुराण-प्रज्ञा पुराण के माध्यम से वर्तमान जीवन की समस्याओं के समाधान और जीवन के उत्कर्ष के सूत्र बताये।

ताम्रेश्वर देवालय उदालगुड़ी में प्रज्ञा पुराण कथा कहते गायत्री परिवार के प्रतिनिधि

आईआईटी जोधपुर में गुरु पूजन

जोधपुर। राजस्थान

आईआईटी जोधपुर कैंपस लाइफ सोसायटी ने वसन्त पर्व पर गुरुपूजन का कार्यक्रम आयोजित कर युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव को श्रद्धा सुमन समर्पित किये। सोसायटी के सेक्रेटरी विवेक रघुवंशी सहित इसमें 100 से अधिक प्राध्यापकों, छात्रों और परिसर कर्मियों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रोफेसर डॉ. विवेक विजय ने प्रतिदिन एक घण्टा उपासना, साधना, आराधना तथा समाज निर्माण के कार्यों में नियोजित करने का आग्रह किया।

प्रज्ञापीठ की प्राण प्रतिष्ठा

साँची, रायसेन। मध्य प्रदेश

भगवान बुद्ध की नगरी साँची में 8 से 10 मार्च को 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ गायत्री प्रज्ञापीठ की प्राण प्रतिष्ठा की गई। प्रारम्भ के कलश यात्रा से लेकर दीपयज्ञ के साथ समापन तक कार्यक्रम में प्रायः चार हजार श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

आयोजन का नेतृत्व केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री सुरेन्द्र वर्मा की टोली ने किया। उन्होंने यज्ञ और गायत्री उपासना के साथ स्वाध्याय की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए इनको नियमित रूप से करने रहने हेतु सबको प्रोत्साहित किया। भोपाल शक्तिपीठ की ओर से लगाए ज्ञानरथ से काफी लोगों ने साहित्य खरीदा।

दुष्कर्म स्वतः ही एक अभिशाप है जो कर्त्ता को भस्म किये बिना नहीं रहता।

देवसंस्कृति विवि. और कैवल्यधाम के बीच प्रगाढ़ हुए संबंध

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि के दो दिवसीय पुणे, लोनावाला प्रवास की विशिष्ट उपलब्धि

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज और सन् 1924 में लोनावाला, पुणे (महाराष्ट्र) में स्थापित देश के प्राचीन योग संस्थान कैवल्यधाम के बीच दिनांक 24 मार्च को एक महत्त्वपूर्ण अनुबंध हुआ है। यह एमओयू दोनों शिक्षण संस्थानों के बीच फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम, स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम, रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन और रिक्रूटमेंट के क्षेत्र में परस्पर सहयोग के लिए हुआ है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय की ओर से प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं कैवल्यधाम की ओर से मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सुबोध तिवारी ने एमओयू पर हस्ताक्षर किये।

डॉ. चिन्मय जी एवं श्री सुबोध तिवारी नए एमओयू के साथ

मानवीय उत्कर्ष का आधार है योग

डॉ. चिन्मय जी ने कैवल्यधाम योग संस्थान एवं शोध केन्द्र के शिक्षक-विद्यार्थियों को 'मानवीय उत्कर्ष' विषय पर संबोधित भी किया। उन्होंने कहा कि मानव जीवन एक दुर्लभ सौभाग्य है, लेकिन इसका लाभ केवल वे ही उठा पाते हैं जिन्हें जीवन का सही उद्देश्य मिल जाता है। ऐसे व्यक्ति स्वामी विवेकानन्द, महाराणा प्रताप, भगत सिंह बन जाते हैं।

डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि योग मानवीय उत्कर्ष का आधार है। यह मात्र शारीरिक क्रिया नहीं है। जीवन के सही उद्देश्य को पहचानने और स्व का सतत विस्तार करते हुए परमात्मा को प्राप्त करने का सुव्यवस्थित विज्ञान है योग। संवेदना, साहस, संकल्प और सतत पुरुषार्थ से ही योग के परम लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

इस अवसर पर कैवल्यधाम के कई अधिकारी प्रो. आरएन बोधे, ब्रिगेडियर सुहास धर्माधिकारी, डॉ. एम.डी. जोशी, डायरेक्टर (एडमिन) भी मंच पर उपस्थित थे। डॉ. चिन्मय जी ने कैवल्यधाम के सस्थापक योगी कैवल्यानंद जी महाराज की कर्मभूमि के प्रथम बार दर्शन करने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की, इसे अपना सौभाग्य कहा।

भव्य स्वागत-दिग्दर्शन

कैवल्यधाम, लोनावाला पहुँचने पर मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सुबोध तिवारी सहित गणमान्यों ने डॉ. चिन्मय जी का भव्य स्वागत किया। उन्होंने पूरे संकुल का भ्रमण कराते हुए वहाँ चल रही गतिविधियों से अवगत कराया।

डॉ. चिनमय जी कैवल्यधाम के संस्थापक स्वामी कुवलयानंद जी महाराज की समाधि के दर्शन करने गये। उन्होंने स्वामी कुवलयानन्द जी के शिष्य एवं वर्तमान अध्यक्ष स्वामी महेशानन्द जी से भेंट कीं। उन्हें परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया और शांतिकुंज पधारने का आमंत्रण दिया।

कैवल्यधाम में 'मानवीय उत्कर्ष' विषय पर उद्बोधन देते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि

गायत्री चेतना केन्द्र, पुणे का दिग्दर्शन

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा नायक डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 24 मार्च 2019 को पहली बार पुणे में हाल ही में बने गायत्री चेतना केन्द्र, वाघोली पहुँचे थे। वे आईटी हब पुणे के समर्पित कार्यकर्त्ताओं एवं युवाओं की भावना और पुरुषार्थ के इस जीवंत स्मारक को देखकर गद्गद थे। इस अवसर पर गायत्री चेतना केन्द्र पर जोन प्रभारी श्री ए.पी. श्रीवास्तव, अनिल सारस्वत, नेतराम, विनोद पटेल तथा लगभग 250 कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

डॉ. चिन्मय जी का यह प्रवास सभी कार्यकर्त्ताओं के लिए उत्साहवर्धक था। उन्होंने 'अपनों से अपनी बात' करते हुए कार्यप्रगति की समीक्षा की, मार्गदर्शन किया। उन्होंने सभी कार्यकर्त्ताओं की जिज्ञासाएँ और समस्याएँ सुनीं और अत्यंत सरलतापूर्वक उनके समाधान दिये।

गायत्री चेतना केन्द्र, पुणे में कार्यकर्त्ताओं को संबोधित करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

जीवन को सद्गुणों से सुशोभित करने की साधना है अध्यात्म

जीजी इंटरनेशनल स्कूल, पुणे में उद्बोधन

25 मार्च को पुणे के जीजी इण्टरनेशनल स्कूल में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति जी का उद्बोधन हुआ। उन्होंने पावर पॉइण्ट प्रेज़ेण्टेशन के सहारे विद्यालय के 200 विद्यार्थी एवं 60 शिक्षक-शिक्षिकाओं को संबोधित किया। उद्बोधन के आरंभ में प्रधानाचार्या भारती जी ने डॉ. चिन्मय जी का परिचय दिया।

डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि पुस्तकीय ज्ञान से धन-सम्पत्ति तो कमाई जा सकती है, लेकिन सुख-शांति नहीं पायी जा सकती। जीवन में सुख-संतोष चाहिए तो सेवा-साधना का पथ अपनाना होगा। इस पथ पर चलने वाले ही स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविंद, महात्मा गाँधी बनते हैं। जीवन को सद्गुणों से सुशोभित करने की साधना है अध्यात्म। इसमें अंधविश्वास और मूढ़मान्यताओं के लिए कोई स्थान नहीं है। उत्कृष्टता के हर आकांक्षी को आध्यात्मिक जीवन शैली अपनानी चाहिए।

जीजी इण्टरनेशनल स्कूल पहुँचने पर सर्वप्रथम डॉ. चिन्मय जी ने महात्मा गाँधी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। स्कूल की निदेशक सोनू गुप्ता और गीता गोयल ने उनका स्वगत किया।

प्रयागराज कुम्भ में 24 लाख लोगों तक पहुँचा युगसाहित्य

उत्तर प्रदेश के 4000 प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं ने दी सेवाएँ, पूरे देश ने किया आर्थिक सहयोग

- 3 सेक्टरों में 108 कुण्डीय एवं 24 कुण्डीय यज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथाएँ
- शांतिकुंज के कई वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने दिया युगसंदेश, विशेष सम्मेलन हुए

55 दिन चला ज्ञानयज्ञ

प्रयागराज में 55 दिनों तक चले कुम्भ मेले में अखिल विश्व गायत्री परिवार ने अभूतपूर्व, अद्वितीय कार्य किया। गायत्री परिवार के शिविर की सम्पूर्ण अवधारणा ही 'ज्ञानयज्ञ' की थी। उत्तर प्रदेश एवं अन्य प्रांतों से आये लगभग 4000 लोगों को प्रेरित और संकल्पित किया गया था, जिनकी सेवाओं के परिणाम स्वरूप 24 लाख लोगों तक युगसाहित्य निःशुल्क अथवा आधी कीमत पर पहुँचाया गया।

ज्ञानदूतों का विशेष दस्ता

40 कि.मी. क्षेत्र में फैले और 20 सेक्टरों में बँटे मेले के हर क्षेत्र में श्रद्धालुओं को साहित्य

कुम्भ मेले में प्रज्ञा अभियान वितरित करते कार्यकर्त्ता

उपलब्ध कराने के लिए विशेष योजना बनाई गई थी। लगभग 400 पिट्ठू बैग बनवाये गये, जिसमें साहित्य भरकर स्वयंसेवकों को प्रतिदिन मेले के विभिन्न क्षेत्रों में पहुँचाया जाता था। वहाँ से दसियों किलोमीटर पैदल चलते हुए साहित्य बाँटते हुए वे शांतिकुंज के बेस कैम्प तक लौटते थे। इस तरह अलग-अलग समय पर लगभग 4000 कार्यकर्त्ताओं ने समयदान किया।

हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, कुम्भ स्मारिका, प्रज्ञा अभियान, पॉकेट बुक्स, पत्रक लाखों की संख्या में निःशुल्क वितरण के लिए उपलब्ध थे। आधी कीमत पर विपुल साहित्य उपलब्ध था।

योजना के प्रमुख सहयोगी

ज्ञानयज्ञ का नेतृत्व उत्तर जोन प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री रामयश तिवारी, श्री योगेश शर्मा आदि के मार्गदर्शन में प्रयागराज शाखा ने बड़ी जिम्मेदारी के साथ निभाया। सर्वश्री देवव्रत साहा राय, अरविंद श्याम सिंह, संजय गुप्ता, सरिता गुप्ता, अवधेश सिंह, जगदीश चंद्र जोशी, पी.पी. अवस्थी, रामभजन मिश्रा, मूलचन्द्र केसरवानी, माधुरी पाण्डेय, एस.बी. सिंह, रामेश्वर त्रिपाठी, सुनील कुमार श्रीवास्तव, राहुल यादव, उमेश मिश्रा, दिनेश यादव, सरयू प्रसाद विश्वकर्मा, प्रेम कुमार सिहं, विनोद कुमार ओझा, भैरों सिंह यादव, जे.पी. गुप्ता, छुन्नू चौबे, मुद्रिका प्रसाद, जयप्रकाश कुशवाह, राहुल सिंह की इसमें अग्रणी भूमिका थी।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) - 249411

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा प्रत्यायित एवं आईएसओ 9001:2015 द्वारा प्रमाणित

प्रवेश प्रारम्भ

सत्र 2019-20

बी एस-सी (गणित) ऑनर्स	3 वर्ष
बी एस-सी (योग विज्ञान) ऑनर्स	3 वर्ष
बी एस-सी (पर्यावरण विज्ञान) ऑनर्स	3 वर्ष
बी ए (संस्कृत) ऑनर्स	3 वर्ष
बी ए (हिन्दी) ऑनर्स	3 वर्ष
बी ए (अंग्रेजी) ऑनर्स	3 वर्ष
बी ए (इतिहास) ऑनर्स	3 वर्ष
बी ए (मनोविज्ञान) ऑनर्स	3 वर्ष
बी ए (संगीत) ऑनर्स	3 वर्ष
बी एस-सी (इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी)	3 वर्ष
बी वोक (3डी एनीमेशन एंड वी एफ़ एक्स)	3 वर्ष
बी सी ए (बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन)	3 वर्ष
बी ए (पत्रकारिता एवं जनसंचार)	3 वर्ष
बी बी ए (टूरिज्म एण्ड ट्रेवल मैनेजमेन्ट)	3 वर्ष
बी आर एस (बैचलर ऑफ रूरल स्टडीज)	3 वर्ष
बी एड (बैचलर ऑफ एजूकेशन)	2 वर्ष
एम सी ए लेटेरल एंट्री (मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन)	2 वर्ष
प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम	6 माह

1. धर्म विज्ञान 2. योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा 3. समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन

एम फिल (पत्रकारिता एवं जनसंचार)	1 वर्ष

1 वर्ष + अधिकतम 6 माह, लघु शोध प्रबंध हेतु

डिप्लोमा पाठ्यक्रम	1 वर्ष

1. डिपलोमा - विज़ुअल इफेक्ट्स (कम्पोज़िटिंग)
2. पी. जी. डिप्लोमा - मानव चेतना, योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा
3. पी. जी. डिप्लोमा - धर्म विज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श

स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम	2 वर्ष

1. एम ए/ एम एस-सी (नैदानिक मनोविज्ञान)
2. एम ए/ एम एस-सी (मानव चेतना एवं योग विज्ञान)
3. एम ए/ एम एस-सी (व्यावहारिक योग एवं मानव उत्कर्ष)
4. एम एस-सी (पर्यावरण विज्ञान)
5. एम एस-सी (एप्लाइड मेडिसिनल प्लान्ट साइन्सेज)
6. एम एस-सी (योग विज्ञान एवं समग्र स्वास्थ्य)
7. एम बी ए (टूरिज्म एण्ड ट्रेवल मैनेजमेन्ट)
8. एम बी ए (रूरल मैनेजमेन्ट)
9. एम ए (व्यावहारिक शिक्षा)
10. एम ए (पत्रकारिता एवं जनसंचार)
11. एम ए (भारतीय इतिहास एवं संस्कृति)
12. एम ए (संस्कृत) 13. एम ए (हिन्दी)
14. एम ए (संगीत-गायन) 15. एम ए (संगीत-वादन)

सम्पर्क सूत्र -

Web: www.dsvv.ac.in Email: admissions@dsvv.ac.in

मोबाइल: 92583 69724, 92583 60930, 92583 60763, 92583 69877, 925836 9611 दूरभाष: (01334) 261367

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आवश्यकता है

जीवन विद्या के आलोक केन्द्र देव संस्कृति विश्वविद्यालय में एक ग्राफिक डिजाइनर की त्वरित आवश्यकता है जिनको कोरल ड्रॉ, फोटोशॉप, डिजाइन, कम्पोजिंग अनुभव, जानकारी एवं डिग्री /डिप्लोमाधारी आदि की विशेषज्ञता प्राप्त हो। कृपया इस योग्यता से सम्बद्ध इच्छुक परिजन अथवा जो उक्त विशेषज्ञता के साथ अखिल विश्व गायत्री परिवार गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज से आत्मीय रूप में जुड़े हैं, अविलम्ब आवेदन कर सकते हैं।

अर्हताएँ : • विभागीय शिक्षा की डिग्री /डिप्लोमा
• किसी संस्थान/विभाग में कार्य का अनुभव

सुविधाएँ : • भोजन एवं आवासादि की सुविधा
• जीवन निर्वाह राशि विश्वविद्यालय के नियमानुसार

संपर्क सूत्र : कुलसचिव कार्यालय,
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज,
हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन-249411
Email ID : provc@dsvv.ac.in,
career@dsvv.ac.in

युवावस्था में पापों का त्याग करना पैगंबरों का काम है। वृद्धावस्था में तो जालिम भेड़िया भी साधु बन जाता है।

इस वर्ष युग चेतना के दो गुने विस्तार के लिए किये जा रहे हैं प्रयास

राष्ट्रीय संगोष्ठी में संगठन सशक्तीकरण और 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना वर्ष' की योजनाओं पर हुआ मंथन

वर्ष 2019 यज्ञ पिता, गायत्री माता को घर-घर पहुँचा देने का उत्साह लेकर आया। कई नगरों में 'गृहे-गृहे यज्ञ अभियान' के सफल और लोकप्रियता प्रयोग हुए। शांतिकुंज द्वारा भी इस वर्ष को 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना वर्ष' घोषित किया गया। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष के विशेष प्रयोग के रूप में 2 जून (परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस की तारीख) को गृहे-गृहे यज्ञ का एक विराट प्रयोग शांतिकुंज द्वारा किये जाने का निर्णय लिया गया है, जिसके अंतर्गत **पूरे देश में एक ही समय पर दो लाख चालीस हजार घरों में यज्ञ किये जायेंगे।**

24 से 27 मार्च की तारीखों में शांतिकुंज में राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित हुई। सभी जोनों के 252 जिलों के 490 प्रतिभागी भाई-बहिनों ने इसमें भाग लिया। इन प्रतिभागियों ने ही 20398 नगर-गाँवों 1,65,000 से अधिक घरों में 2 जून को गायत्री यज्ञ कराने के संकल्प लिये।

कार्यशाला में न केवल इस विशिष्ट अभियान को प्रोत्साहित किया गया, बल्कि वर्ष 2026 में आयोजित होने जा रहे मातृशक्ति श्रद्धांजलि समारोह को देखते हुए संगठन को सुव्यवस्थित-सशक्त करने पर सघन विचार मंथन हुआ।

कार्यशाला को प्रायः सभी वरिष्ठ वक्ताओं ने संबोधित किया। संगठन की मूल इकाई मण्डलों को सक्रिय एवं संगठित करने पर बल दिया गया। कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण को प्रमुखता देते हुए उसके लिए योजनाएँ बनाई गईं। नयी तकनीकों का प्रयोग करते हुए परस्पर संवाद को प्रखर और प्रभावशाली बनाने की नई पहल हुई।

श्रद्धेय डॉ. साहब एवं मंचासीन गणमान्य प्रतिभागियों को सक्रियता की शपथ दिलाते हुए

सफलता की कहानी-संकल्पों की जुबानी

संगठनात्मक सक्रियता
28000 नये मण्डल बनायेंगे
951 मण्डल प्रशिक्षण शिविर एवं युगशिल्पी सम्मेलन
7,011 मण्डलों द्वारा समूह साधना
378 पीठों पर आवासीय शिविर
3324 दो-दो घंटे के शिविर
1603 रविवासरीय गैर आवासीय शिविर
122,351 नये श्रद्धालु जोड़ेंगे
55,641 नये लोगों को दीक्षा दिलाएँगे

पत्रिकाओं के नये सदस्य
2,31,229 अखण्ड ज्योति के
58,427 प्रज्ञा अभियान के

2 जून को गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ
20398 नगर-कस्बों में
165869 यज्ञ किए जायेंगे

82 जोन-उपजोनों में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की सुविधा बनायेंगे

कुछ प्रेरक उक्तियाँ

- यह कार्यशाला एक नये बदलाव के लिए है। सभी के जीवन में नया चिंतन, नया बदलाव आना चाहिए।
- हममें से कोई भी भटकने न पाये, किसी भी स्थिति में महंत और सामंत न बन जाये। हमको यह मानकर चलना चाहिए कि हम सब कार्यवाहक हैं।
- युवा भविष्य के कार्यकर्त्ता हैं, उनको प्यार दो, समर्थन दो, सहयोगी बनाओ। बिना प्यार दिये, बिना आत्मीयता का विस्तार किये मिशन का विस्तार नहीं हो सकता।
- हमारा संगठन परिवार का संगठन है, जिसमें परिवार के सदस्य की तरह नये-पुराने सभी को बार-बार सहना और साधना पड़ेगा। संगठन को मजबूत करना है तो 'मैं' को गलाना पड़ेगा। 'मैं' को मजबूत करोगे तो संगठन गल जायेगा।
- परम पूज्य गुरुदेव कहते थे कि हमारे संगठन को इतना मजबूत होना चाहिए कि हर दरवाजा हम बराबर खटखटाते रहें।
- आज मानवता उस चौराहे पर आकर खड़ी है जहाँ संकट और सौभाग्य दोनों के अवसर हमारे समक्ष हैं। एक मार्ग वह है जहाँ स्वार्थ, संकीर्णता, अहंकार के कारण मनुष्य सामूहिक आत्महत्या पर उतारू है। दूसरा मार्ग गुरुदेव का बताया वह मार्ग हैं जो पवित्रता का है, महानता का है, देवत्व का है, जिसका संबंध पूरी मानवजाति के भविष्य और अस्तित्व से है। निश्चय हमें करना है कि हम विनाश के मार्ग को अपनायें या भगवान के लीला सहचर, सहयोगी के रूप में अपना नाम दर्ज करायें।

देशभक्ति के रंग घुले थे इस वर्ष की होली में

विकृतियाँ, कुरीतियाँ मिटाओ हल्का-फुल्का मस्तीभरा जीवन जिओ

• श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

होली हमारे देश की अर्थ व्यवस्था और संस्कृति से जुड़ा हुआ पर्व है। होली का पूजन अपने आप में शिक्षण है। यह ईश्वर के संरक्षण के प्रति आस्था बढ़ाता है, सामाजिक उत्कर्ष, देशभक्ति, नारीशक्ति के सम्मान की, अन्न को ईश्वर का प्रसाद मानकर ग्रहण करने की प्रेरणा देता है। रंगों के त्यौहार का संदेश है कि हम अपने जीवन में रंगों का महत्त्व पहचानें। अपनी ऋषि-कृषि संस्कृति को पहचानें और अपनायें। मनोविनोदपूर्ण हल्का-फुल्का जीवन जियें।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने यह संदेश 20 मार्च की सायं होलिका दहन के अवसर पर दिया। उन्होंने प्रत्येक कर्मकाण्ड की प्रेरणाप्रद व्याख्या के साथ समरसतापूर्ण समाज के निर्माण में अपना भरपूर योगदान देने का आह्वान किया।

होलिका पूजन श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. साहब ने किया। इस अवसर पर शांतिकुंज के सभी वरिष्ठ-कनिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के साथ देश-विदेश से आये श्रद्धालु, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के अधिकारी-विद्यार्थी हजारों की संख्या में उपस्थित थे।

श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. साहब की मुख्य उपस्थिति में शांतिकुंज में हुआ होलिका दहन

शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि स्वरूप नहीं खेली रंगों की होली

पर्व-संदेश में श्रद्धेय डॉ. साहब ने पुलवामा के आतंकी हमले में शहीद सैनिकों के बलिदान को बड़े सम्मान के साथ याद दिया, भावभरी श्रद्धांजलि दी। शहीदों को श्रद्धांजलिस्वरूप इस वर्ष धूलिवंदन का पर्व केवल अबीर, गुलाब, चंदन के तिलक तक ही सीमित रहा। हर वर्ष की तरह देव संस्कृति विश्वविद्यालय में इस बार फूलों की होली भी नहीं मनाई गई।

युगसृजेताओं को सैनिकों जैसी राष्ट्रभक्ति अपनाने की प्रेरणा देने के लिए उन्होंने मिशन के प्रतिष्ठित कवि श्री शचीन्द्र भटनागर की लिखी विशेष कविता भी पढ़ी, जिसकी प्रथम दो पंक्तियाँ थीं :

अब की बार न होली गुजरे
केवल हँसी ठिठोली में।
देशभक्ति के रंग घुले हों
रंग-बिरंगी होली में।।

जीवन रस अनुभव करने एवं प्रकट करने का पर्व

उत्सव-2019 के उत्साहभरे पल : सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती छात्राएँ, विजेताओं को सम्मानित करते कुलाधिपति एवं दौड़ में भाग लेती छात्राएँ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 17 से 19 मार्च की तारीखों में 'उत्सव-2019' सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने इसका समारोहपूर्वक शुभारंभ प्रेरक संदेश के साथ किया, खेल का अनुशासन बनाये रखने की शपथ दिलाई।

जीवन रस अनुभव करो

जैसे वसंत ऋतु में प्रकृति में नवरस का संचार होता है, वैसे ही यौवन में जीवन रस का तेज दिखाई देता है। 'उत्सव-2019' उसी उल्लास को अनुभव करते हुए उसे बढ़ाने और प्रकट करने का पर्व है।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति देसंविवि

उत्सव-19 का शुभारंभ कुलाधिपति जी द्वारा कुलपताका फहराकर किया गया। इस अवसर पर गणतंत्र दिवस की राष्ट्रीय परेड से भाग लेकर लौटी प्राची अग्रवाल व दिव्यांशी सूर्यवंशी ने मशाल लेकर पूरे मैदान की परिक्रमा की। सभी खिलाड़ियों ने हाथ उठाकर नियम-मर्यादाओं के पालन की शपथ ली। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी सहित वरिष्ठ अधिकारियों, शिक्षकों ने भी खेल में भाग लिया।

उत्सव 2019 में खेल अधिकारी नरेन्द्र सिंह के मार्गदर्शन में कबड्डी, टेबल टेनिस, बैंटमिटन, वॉलीबॉल, बास्केट बॉल, क्रिकेट, जूडो, लंबी कूद, फरार्टा दौड़, डिस्कस थ्रो, शॉर्टपुट, पावर लिफ्टिंग, सेवन स्टोन आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। विजेताओं को प्रशस्ति पत्र एवं पदक देकर सम्मानित किया गया।

बौद्धिक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी डॉ. शिवनारायण प्रसाद की टीम ने प्रज्ञा युगसंगीत, स्वरचित कविता पाठ, अंत्याक्षरी, समूह नृत्य, एकल प्रज्ञागीत, प्रतियोगिताएँ कराईं। चित्रकला, मेंहदी व रंगोली आदि प्रतियोगिताओं ने सभी विद्यार्थियों के भीतर के कलाकार को जीवंत किया, उनकी प्रतिभा को उकेरने का अवसर दिया।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलपति श्री शरद पारधी एवं समस्त विश्वविद्यालय परिवार की उपस्थिति में सम्पन्न रंगारंग समारोह को देखकर श्रोता मंत्रमुग्ध थे। विद्यार्थियों की प्रस्तुति में भविष्य के भारत का संकल्प था, योजनाएँ थी, राष्ट्र के लिए समर्पण की भावनाएँ थीं।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय, सह सम्पादक-प्रमोद शर्मा, सहायक सम्पादक-धीरेन्द्र सिंघारपुरिया
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866
संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक) email : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन : news.shantikunj@gmail.com

Publication date:12.04.2019
Place: , Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
Postel R.No.
UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2018-20